Over 20 Years of Celebrating the Arts

India Foundation for the Arts

I F A

Infosys Foundation

मिर सिलसिला

राजकुमार रजक

यह निबंध फ़ाउंडेशन संचालित बाबा फ़रीद मिर परियोजना का एक परिणाम है। इसे इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स द्वारा रूपायित एवं इंफोसिस फ़ाउंडेशन द्वारा समर्थित किया गया है।

मिर सिलसिला

राजकुमार रजक

इस आलेख में मिर समुदाय के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के संक्षिप्त रेखांकन से होते हुए समकालीन मिर समुदाय की संगीतीय परंपरा के विस्तार की चुनौतियाँ एवं मिर समुदाय के पारंपरिक संगीतीय धारा के विस्तार को संवहनीय बनाने की दिशा में राजस्थान के बीकानेर जिले के पुगल, एक पी. बी., रामडा, रामसर, भानिपुरा, छतरगढ़, चार के.पी.डी.आदि ग्रामों के मिर समुदाय के साथ कार्यरत संस्था इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बैंगलोर के जुड़ाव की यात्रा। जिसमें मिर समुदाय का पूर्व वर्तमान और भविष्य के रेखांकनों का विश्लेषण है। इस परिदृश्य को प्रतिबिम्बित करने के लिए इस आलेख का निर्माण किया जा रहा है। इसके साथ ही मैं संस्था इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बैंगलोर का शुक्रगुजार हूँ। जिन्होने मेरा मिर समुदाय के विविध परियोजनाओं में ख़ैरमकदम किया और इस आलेख के निर्माण का अवसर बनाया।

इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बैंगलोर
के लिए प्रस्तुत यह
परियोजना यात्रा रूपी निबंधकीय आलेख
‘मिर सिलसिला’

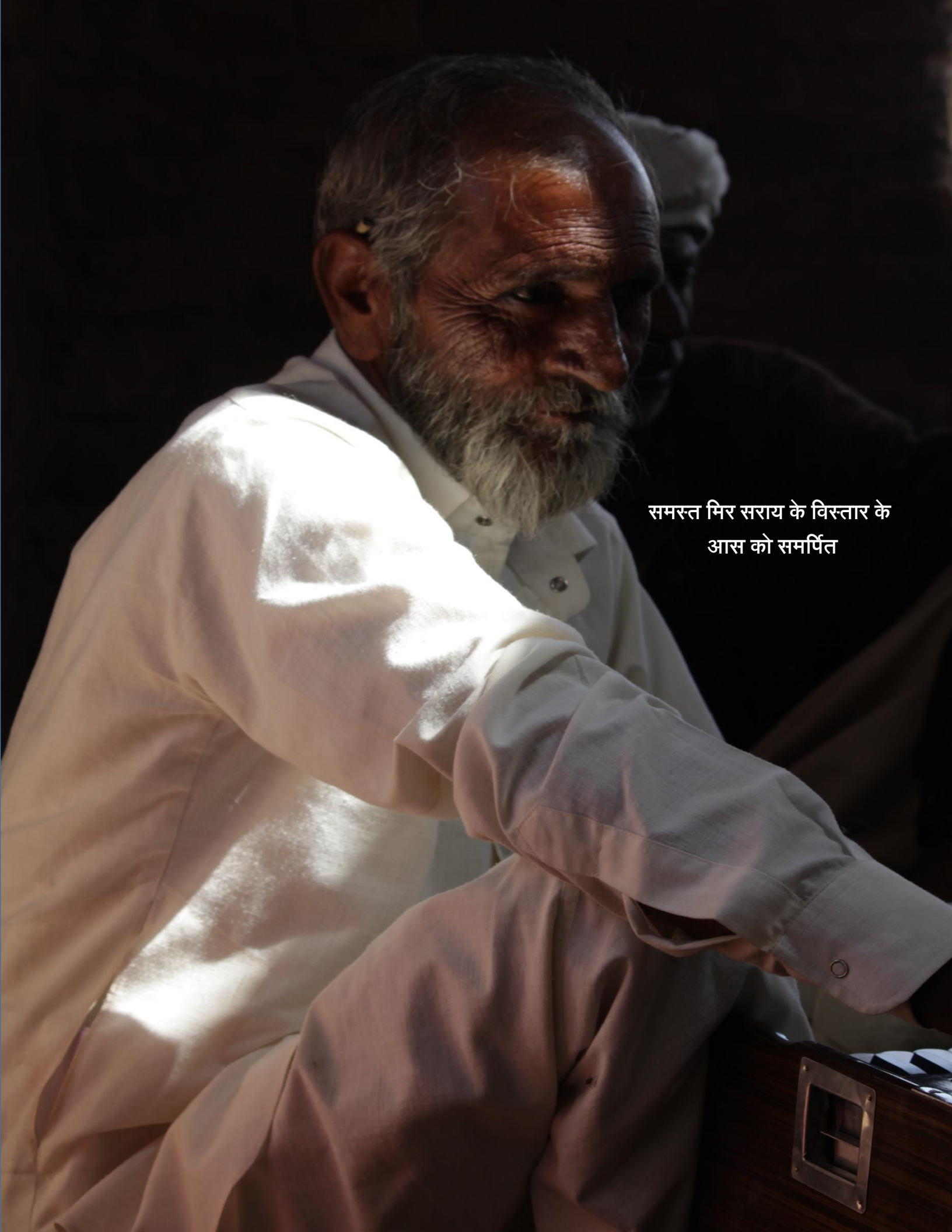

समस्त मिर सराय के विस्तार के
आस को समर्पित

प्रसंग

इस समुदाय के साथ इतना लंबा समय बिता इसका आभास तब जान पड़ता है। जब इस समुदाय की बारीकियों के बारे में सोचता हूँ। इनको परखता हूँ। मिर समुदाय का इनके यजमानों के साथ संबंध और मिर संगीत का पेशेवर रूप में अपने समुदाय से बाहर भी प्रसार पाना। इस समुदाय का और इनके पेशेवर संगीत परंपरा का समाजशास्त्रीय अध्यन करना। जैसे की किसी समुदाय के अस्मिता की भाषा कैसे संगीत बन उठती है। कैसे सदियों की धार्मिक अवहेलना और कट्टरता से अपने धार्मिक अभ्यासों का अपना धर्मांतरण करना और संगीतिक वैशिष्ट्य एवं इनके संगीत का लोकपक्ष के साथ अन्तःक्रिया की असीम संभावनाओं का होना। और मीरों के संगीत परंपरा में रागों की अवधारणा जिसमें शाष्त्रीयता और निजतत्वता का तालमेल का गुथा हुआ सुर सुनाई पड़ना है। इस तरह के गहन नए रास्तों के संधान में मुझे बहुत सहायता मिली है। इस समुदाय के उद्भव से आगे तक के यात्रा वृतांत जिसमें सदी दर सदी हुए तमाम समाजशास्त्रीय और राजनैतिक प्रभावों के फेरबदलों की पड़ताल कर इनके स्वरूपों पर एक पुस्तक रूपी आलेख का निर्माण की आकांक्षा भी इस समुदाय ने मेरे अंदर बीजारोपण किया है। खैर यह समय के साथ कितना हो पाएगा और यह कार्य इस मिर समुदाय के विस्तारण के लिए कितना भूमिका ले पाएगा में मंथनरत हूँ। लेकिन एक बात तो अनुभव कर पाया ही हूँ की समुदाय की अस्मिता और उसके मूल्य कैसे एक कलात्मक भाषा का आविष्कार करते हैं। और कैसे यह लोकपक्ष की संगीत भाषा से ध्रुपद की भाषा बन जाती है। अस्मिता के संकटों से घिरा हुआ कैसे एक समुदाय जो आविष्कारक है पीछे रह जाता है।

जानने समझने की इसी उत्सुकता के साथ मैं यह मिर सिलसिला शीर्षक से यह निबंधकीय लेख आप सभी से साझा कर रहा हूँ। इस लेख में मिर संगीत और मिर समुदाय और ऐसे समुदायों के संस्क्रटाइज़ेशन के कुछ ही पहलुओं पर प्रकाश डाल पाया हूँ। इस पर समाजशास्त्रीय विवेचन की केवल एक लघु आकृति बना पाया हूँ। इस निबंधकीय लेख में तफ़सील से इन बिन्दुओं पर प्रकाश डालना संभव नहीं हुआ। इस पर सम्पूर्ण विवेचन लेख कार्य को भविष्य के लिए अभी लघु विराम देता हूँ।

यह निबंधकीय लेख मुख्य रूप से मिर समुदाय के परियोजनाओं खास कर बाबा फरीद मिर शिविर और सम्मेलन 2010 एवं मिर यात्रा 2015 जिसका संचालन इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बैंगलोर के द्वारा किया गया है। इनके सदृश्य यात्रा का विवरण मेरे विवेचन के साथ प्रस्तुत करता है। मिर समुदाय के पेशेवर संगीतिय परंपरा का एक आलेखचित्र खींचता है।
आशा करता हूँ कि मिर सिलसिला नामक यह निबंधकीय लेख इस समुदाय के विस्तारण की दिशा में एक सार्थक योगदान होगा।

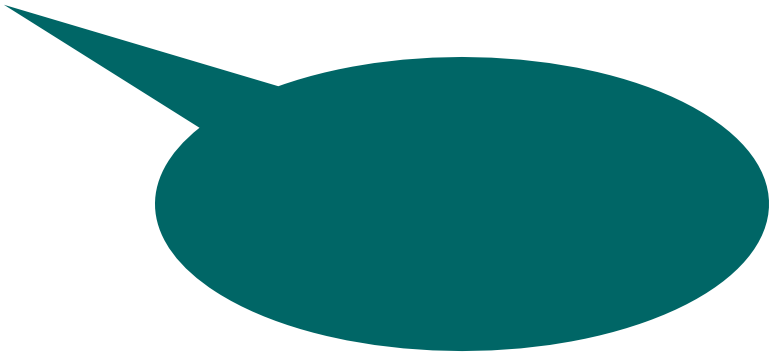

जमाने भर की गैर ज़मी दोज़ तहज़ीबों में यह देखा जाता रहा है कि उसकी भूगौलीक विविधिता मानव विविधिता का निर्माण करती है। मानव अपने सांस्कृतिक शैलियों को जीवन मूल्यों के साथ निरंतर निर्माण करता चलता रहा है। तमाम युगों की परछाई इन बहुधा शैलियों के निर्माण में झलती है जैसे रहन-सहन, बोलचाल, ओढ़ना-पहनना, खाना, गाना, नाचना, सुनना, सुनाना इन सभी पर कई ज़मानों की दास्तांगोई मुकम्मल सी लगती है। जो अतीत और कल्पना को एक साथ गूथ कर वास्तविकता के प्रवाह को निर्माण करने की जद्दोजहद में सदा नीरा जुटी रहती है और जन एवं जन समुदाय की अस्मिताओं को प्रखर बनाती है। विविध समुदायों के आपसी साँस्कृतिकरण को अंजाम देती है। इस साँस्कृतिकरण (Sanskritization) की प्रक्रिया हर एक काल खंड में विविध विरोधाभास को उत्पन्न करती है। नए से पुराने अथवा सामाजिक मूल्य और व्यक्ति एवं सामाज आदि इन विरोधाभासों और सत्ता के प्रभाव से परिवर्तनकारी, सुधारकारी व अन्य धाराओं के मुखियाओं व अनुयायियों व बुद्धिजीवियों का प्रादुर्भाव हो पाता रहा है। इस प्रादुर्भाव के साथ ही साथ समकालीन समाज में मानविकता के संकटों के द्वंध व संघर्षों की शैली एवं इन संघर्षों का रूपान्तरण घटता है। उपेक्षित जनमानस की लंबी क़तार को भी अपने साथ जोड़ता है। एक अखंड और मानविय समाज की कल्पना को रूपायित करने में एक अंग बनाता है।

इस अंगीकरण के क्रम में एक अलग ही मिले जुले कबीले का आविष्कार होता है। जहां भक्ति है किसी नीराकार परमानंद की तो कहीं भक्ति है वास्तविक उपस्थिती की उपस्थित के आकार की है। जिसका प्रसंग हमें समूचे भारत में घटे भक्ति आंदोलनों में दिखता है। जिसका प्रभाव एशिया के अलग-अलग भूगौलीक परिवेशों में भी छीटपुट दिखाई पड़ता है। इसमें बहुत ही प्रभावी ढंग से सूफीयों और अन्य कवियों का एक बड़ा हुजूम हमारी तहज़ीब में प्रकाश पाता है। भारत के भूगौलीक परिवेश के विविध भाषा –भाषायीओं के साथ एक घनिष्ठ और अखंड संबंध स्थापित कर विविध सदस्यों के संग साहित्यिक परिवार को निर्माण करता है। जो ज्ञानआश्रयीय और प्रेमाश्रयी प्रेममार्गियों के मार्ग को प्रशस्त करती है। जिसमें आगे चलकर एक मार्ग दुनियावी मोहब्बत से रूहानी इश्क़ की दिशा में अपने को अनुसंधानित करता है। प्रेममार्गीय एक तरतीब का प्रवाह करती है। जिसमें बहुधा सूफी और कवि चिश्ती सूफी धाराओं से आते नज़र में आए हैं जिनमें हजरत ख्वाजा फरीदुद्दीन गंजशकर (1173-1266) (बाबा फरीद), सरवरी क़ादरी सूफी आदेश की स्थापना करने वाले हज़रत सुल्तान बाहू (1631-1691) एवं शाह हुसैन (1538-1599), बाबा बुल्ले शाह (1680-1758), हाशम शाह (1735-1843), शाह मुहम्मद (1780-1862) 17वीं सदी में हज़रत शहीद सरमद काशानी, मियां मुहम्मद बख़्श (1830 1907), ख़्वाजा ग़ुलाम फ़रीद (1845- 1901) तथा अन्य सिंध, मुल्तान (वर्तमान पाकिस्तान में), पंजाब और इससे लगे राजस्थान, गुजरात व उत्तर भारत, दक्षिण भारत आदि स्थानों में दिखते है।

सूफि कवियों के साथ ही साथ ऐसे छोटे या बड़े समुदाय भी प्रकाश में आए हैं। अपने अस्मिता को स्थापित करने की दिशा में जो इस सूफि पंथ के साथ यानि प्रेमार्गीय पंथ में अपने आप को समाहित कर लीये हैं। इस तत्कालीन सूफी संतों की वाणियों को तहज़ीब के क्रम खंड में कई समुदाय आगे ले कर आए। जो सूफी –कवियों के वृहद जनमानस तक पहुँचने व पहुंचाने के मुख्य और अहम सूत्रधार है। जो आज मीरासी हैं मिर है।

आज इस लेख में हम खास कर राजस्थान के बीकानेर जिले में फैले मिर समुदाय और इस मिर समुदाय के संगीतीय परंपरा के विस्तारिकरण की दिशा में इस समुदाय के साथ हमारे समाकलन का सिलसिले वार बानगी के क्रम को एक प्रकाशन रूप देना और इस पर एक साझा समझ और इस अनुभव को यात्रा वृतांत के रूप में प्रस्तुत करने की दिशा में इस लेख का निर्माण किया जा रहा है।

जिसमें मेरे और मिर समुदाय के मध्य सूत्रपात घटाने वाली संस्था इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बैंगलोर के जुड़ाव से पड़ने वाले सामुदायिक प्रभाव और इसके विस्तारण पर यह आलेख एक चित्रांकन प्रस्तुत करता है। जो मिर समुदाय के संगीतीय परंपरा के विस्तार की कड़ी में एक अहम भूमिका निर्वहन करता है।

मिर समुदाय स्मृतियों – वर्तमान और भविष्य के मध्य

कहा जाता रहा है कि मिर समुदाय का अभिर्भाव पहले से ही भारत में अस्तित्व में रहा था। खास कर तानसेन से प्रभावी यह समुदाय का क्रम लगभग तानसेन के समकालीन रहा है। मैं इसका ना के बारबार ही प्रमाण रख सकता हूँ पर इस कथन को प्रमाणित करने के लिए बीकानेर मिर समुदाय के बड़े उस्ताद शब्बान ख़ान से गुफ़्तगू करना लाजिमी है। क्योंकि इस कथन को पीढ़ियों से प्राप्त इस बड़े उस्ताद से ही यह पता चलता है। लेकिन कुछ तथ्य ऐसे भी मिलते हैं कि कैसे उत्तर भारत में भक्ति युगीन आंदोलन के दौरान 13वीं शताब्दी में अमीर खुसरु के समय में भी भारत के मनुवादी वर्णव्यवस्था में अस्मिता हनन की दुर्नीतियों की वजह से मुक्ति की तलाश में अपने अस्मिता के स्थापन के लिए कुछ निचले क्रम के हिन्दू जातियों के द्वारा मुस्लिम धर्मभ्यास में नामकरण कर लिया गया। इसका एक मुख्य वजह यह है कि मनु विचार के तहत शूद्र किसी भी प्रकार के पुजा अर्चन एवं देवालयों में प्रवेश के हकदार नहीं है। पर सूफी संतों की संगत करने की किसी भी प्रकार की मनाही नहीं है । इनकी दरगाहों और इबादत गाहों में प्रवेश में किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है। राज्य के ऐसे कोई फरमान भी नहीं हैं और ना ही यहाँ किसी का इस प्रकार का कोई आदेश। यहाँ बिना किसी कर्मकांड के धर्माचरण की भक्ति की स्वतन्त्रता है। इस मुक्ति रूपी मार्ग में एक माय होने के लिए भक्ति के लिए तमाम समुदाय इस्लाम में सम्मिलित हुए। जिसमें जाट, मेघवाल व अन्य शूद्र कहे जाने वाली जातियाँ रहीं हैं। इनमें वह समुदाय भी है जो शादी ब्याहों और अन्य अवसरों पर ढ़ोल बाजन एवं गीत –संगीत का जजमानी करते थे। वो मीरासी में तब्दील हो गए। वहीं मुझे पुरजोर तरीके से लगता है कि चारण समुदाय का वह हिस्सा भी मीरासी समूह में तब्दील हुए हैं जो स्थानीय राजाओं के संपर्क से बहुत ही दूर थे। चारण समुदाय के मुख्य पेशे में आसू (इंप्रोवाइज्ड) कथागायन शामिल रहा है। इस कथागायन को स्थानीय राजा या रसूकदार के शान में गया जाता रहा था। जो मीरासी संगीत परंपरा से कई मायनों में कुछ दैनिक तत्वों के साथ मेल खाती है।

इनके अलावा और भी कई मत हैं जो ज़्यादा पुख्ता नहीं जान पड़ते पर यह कहा जा सकता है कि मीरासी समुदाय में लगभग आज से आठ - नौ सौ वर्ष विगत अरबी धर्मभ्यास के पहले भारत के भूगौलीक क्षेत्रों में सिंध, मुल्तान और अरबी का मिलाजुला धर्मभ्यास रहने रहा होगा। इसमें अरबी अभ्यास की प्रखरता रही होगी। जिसका लक्षण इनके जीवन शैली में भी दिखाई पड़ता है। मीरासी समुदाय खास कर पंजाब की तरफ से स्थानांतरण होकर पड़ोसी राज्य एवं इन पड़ोसी राज्यों के पड़ोसी राज्यों में रचने बसने लगने लगे का सिलसिला दिखाई सा पड़ता है।

उत्तर भारत के मीरासी लगभग पाँच उपशाखाओं में बटे दिखते है बेत, अब्बल,पोसला, कट्टू और कलेत। इनके यह समूह उत्तर भारत के मुस्लिम रायभट के समान नज़र आती है। जो नवधर्मी मुस्लिम हैं। एवं इनकी कुछ ही संख्याओं को कारांची पाकिस्तान में पाया जाता है। जो वहाँ मुहाजिर समुदाय के एक हिस्से है।

मीरासी मिर उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, हरियाणा और मुख्यतः राजस्थान के बीकानेर, नागौर, जोधपुर, चितौरगढ़, अजमेर एवं जैसलमेर के छिटपुट भूगोलों में रहते हैं।

इनमें से एक और मुख्य रूप से संगीतीय परंपरा को अपने तहज़ीब में बरकरार रखने और विस्तार के लीये व्याकुल मिर समुदाय बीकानेर में फैले इन्दिरा गांधी नहर के ग्रामञ्चलों में समकालीन जद्दोजहदों से रूबरू होते जीवन बसर कर रहा है और अपने संगीतीय परंपरा के साथ जीवन निर्माण की आस कर रहा हैं।

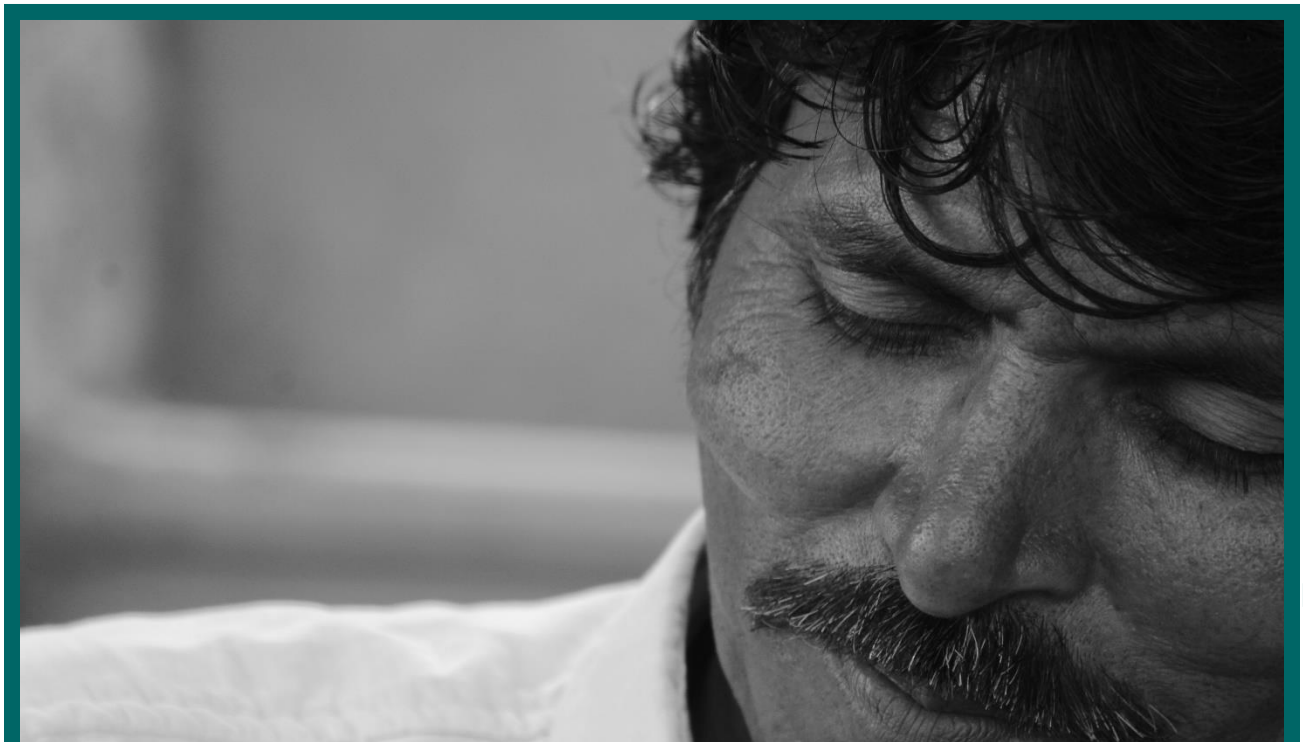

मिर समुदाय: राजस्थान बीकानेर

यहाँ के स्थानीय मिर समुदाय में अधिकत्तर मिर परिवार अपने कुछ पुरातन ग्रामों से भी विस्थापित हुए हैं। इन विस्थापनों का मुख्य कारण रहा है खेती-किसानी क्योंकि मिर समुदाय अपने गीत संगीत की अनूठी परंपरा के साथ कृषि को भी अपने जीवन का एक अभिन्न अंग बना रखे हैं।

लगभग 1982 के आस-पास सरकार द्वारा प्रत्येक परिवार को सरकारी ज़मीन बैंक से ज़मीन का एक छोटा हिस्सा लगभग प्रत्येक निम्न परिवार को प्राप्त हुआ था। इन प्राप्त ज़मीन के छोटे हिस्से असल में इनके बसोबास वाले ग्रामों से काफी दूर –दूर थे। कंकड़ीली-पथीरिली ऊबड़खाबड़ जंगली ज़मीन के टुकड़ों को कृषि के लिए उपयोगी बनाना आजकल के जैसे आसान बात नहीं थी और न ही झट से सपाट कृषि भूमि बनाने के लिए इन मिर किसानों के पास ऐसी कोई खास विधुतीय सुविधा ही थी। ख़ैर बसोबास ग्राम से कृषि हेतु लगातार प्राप्त ज़मीन पर आना-जाना और कृषिकार्य करना काफी मुश्किल का शबब बनने लगा तो कुछ मिर और अन्य किसान परिवार इस प्राप्त ज़मीन के आस-पास खाली ज़मीनों में अपना-अपना छान छप्पर तान के धीरे -धीरे बसने लगे। मिर समुदायों में बीकानेर के सत्तासर से 20 किलोमीटर दूर 1पी. बी. नाम का एक छोटी ढानी है। इस ढानी के मिर परिवार लगभग 30 से 35 वर्ष पूर्व ग्राम रानेवाला से उठ कर यहाँ आ बसे थे। जहां एक ही मिर परिवार के कई उप परिवार भी बसोबास करते हैं। इनके साथ ही साथ मेघवाल समुदाय भी यहीं बसोबास करती है। जो मिर समुदाय की भाँति कृषिकर्म और गीत-संगीत परंपरा का निर्वहन करते हैं।

ख़ैर ऐसे विस्थापीत ग्रामों के साथ –साथ ऐसे ग्राम भी हैं। जहां पर वहाँ के पुरातन ग्रामीण ही बसोबास करते हैं। सरकारी प्राप्त ज़मीन पर अपने कृषि संबन्धित जुड़ाव रखते हैं। समय –समय पर यहाँ कृषि माह के अनुसार उपलब्ध होते हैं। इनमें अधिकत्तर वो मिर परिवार हैं । जो किसी कस्बे के मुख्य बाज़ारी मुहल्ले में अपना घर भी रखते हैं। जिसकी अपनी आर्थिक चुनौतियाँ भी है।

मिर कुन्बे संगीत परंपरा के पारंपरिक श्रोता इनके गाँव में और आस-पास के ग्रामों में निवास करते हैं। जो किसी न किसी अनुष्ठान चाहे वह शादी-ब्याह हो या जन्म संबंधी पारंपरिक विधि इनमें मिर कलाकारों को ससम्मान आमंत्रित करते हैं। यह ससम्मानित कार्यक्रम अपने आप में अकेला कार्यक्रम नहीं वरन इन अनुष्ठाणिक विधियों की एक मजबूत कड़ी है। जो रात भर या दिन भर संगीत का महफिल बैठाते हैं। यहाँ संगीतीय प्रदर्शन के पश्चात मिर गायक और वादक को भोजन, रुपए और कुछ धातु भी उपहार में भेंट प्रदान कर मिर को विदाई देते हैं। इन अनुष्ठानों के अलावा मिर समुदाय के गायक –वादक स्थानीय उर्स मुबारकों पर भी काफियां –क़लाम व भजन गाते है और उपस्थित श्रोता अनुयायियों को आध्यात्मिक प्रेममार्गीय प्रसन्न्ता प्रदान करते हैं।

जीवन की निरंतरता और इसके भरण-पोषण के इन माध्यमों एवं अवसरों की अपनी एक निश्चित अवधि व तिथि होती है। जिसके कारण ये कहा जा सकता है कि वर्ष भर न तो इनके संगीतीय श्रोता जजमान ही अवसर बना पाते हैं। और न उर्स मुबारकों की मुबारक घड़ियाँ एक के बाद एक होती हैं और ना ही कृषि समूचे वर्ष साथ देता है। क्योंकि यहाँ इन समुदायों की कृषि भूमि की अपनी भूगौलीक दिक़्क़तें भी काफी हैं। इनमें एक मानव निर्मित दिक़्क़त है पानी की व्यवस्था जो काफी चुनौती पूर्ण होती है। सुनसान महीने बेरोजगारी के दिनों में तब्दील हो जाती है। यह घटनाएँ जब मुश्किल बन सामने खड़ी होती है।

तब मिर परिवार के सदस्य एक और रास्ता खोजते हैं। यह रास्ता केवल मिर परिवार ही नहीं बल्कि अन्य पड़ोसी परिवार भी खोजते हैं। जहां से रोजीरोटी की एक और दिग्भ्रम स्थिति पैदा होती है। जब ये अधिकत्तर से अधिकत्तर मिर परिवार अपने पड़ोसियों या मित्रों के साथ बड़ी-छोटी मालवाहक गाड़ियों के ड्राइवर, कंडक्टर अथवा राजमिस्त्री के सहयोगी मजदूर के रूप में घर और स्वयं के जेब की कुछ मुमकिन जरूरतों को इकठ्ठा कर लेते हैं।

मिर समुदाय अपने कलात्मक पेशे के साथ दूसरे माध्यमों से भी अपनी जीविका इकठ्ठा कर सकते हैं। परंतु हमें यह निर्णय झट से ले लेने के पहले समकालीन परिस्थितियों व मिर परंपरा के ऐतिहासिक लक्ष्णो की विधीवत तफ़तीश करनी होगी। जिससे किसी खास निर्णय तक पहुंचने का प्रयास किया जा सकता है। यहाँ इन मसलों का हवाला इसलिए नहीं दे रहा हूँ कि इनकी विकास क्रम में दूसरी जिजीविषा नहीं जुड़ सकती बल्कि इसलिए की आखिर यह स्थिति बनी कैसे और क्यों। इस जिज्ञासा के मूल में ऊपर के उदाहरणों को अगर हम पलट कर देखें तो कुछ स्थिति धुंधले से उजागर होती नज़र आ सकेगी। या यूं कहें की मिर संगीत परंपरा के कानों में आखिर संकट अपने मर्सिये को पढ़ने के लिए बेताब होकर मिर समुदाय के द्वार पर निष्ठुर क्यों खड़ा है। ऐसे कौन से संकट का सामना करना पड़ा जिससे मिर परिवार और मिर समुदाय अपने पारंपरिक संगीत धरोहर से छूटने की कगार पर आ खड़ा हुआ है। इस आलेख के पहले चरणों के अंश में इस पर संक्षिप्त एक आलेखचित्र उकेरने का प्रयास किया गया है। और आलेख के दूसरे चरण में मिर समुदाय के साथ इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बैंगलोर एवं अन्य स्वैच्छिक व्यक्तियों के संबंध से किस प्रकार का विस्तारित प्रभाव इस समदाय पर रहा है। इसका एक संक्षिप्त आलेखरूपी चित्रण किया जा रहा है।

समुदाय के निरंतर प्रवाह जिसे हम विकास की एक निरंतर अवस्था कह सकते हैं। जो लगातार विकसीत की प्रक्रिया में लिप्त रहती है। इससे पड़ने वाले बदलावी प्रवाह का प्रभाव सभी कुंबो पर कम ज़्यादा पड़ता ही है। अब मसला है की यह प्रभाव किन सामाजिक मूल्यों की तरफ इशारा करता चलता है। मिर समुदाय की वर्तमान परिस्थिति को देखा जाए तो मिलेगा कि मिर परिवारों और इनके श्रोता परिवारों की एक बड़ी संख्या का विस्थापन हुआ। जिजीविषा के अवसरों का समय के साथ विस्तार तो हुआ लेकिन मजदूरी वही ढाक के तीन पात। देश के नए और पुराने शहरों एवं इनके क्षेत्रों में विधुतीय संगीत प्रणाली का भी एक खासा प्रभाव दिखता है। जहां ये देखने को मिलता है कि कुछ ही किराए पर विधुतीय संगीत यंत्रों का उपयोग ग्राम एवं मुहल्लों में दिखाई देता है। जिनके घरों में इन माध्यमों से अनुष्ठान का आयोजन होता है। उन घरों को आस-पास की तुलना में अधिक शहरी और उन्नत माना जाता है। यहाँ तक ये भी की मिर कलाकारों को जजमानी में अधिक मुद्रा और वस्तु देनी पड़ेगी बनिस्बत विधुतीय सगीत साधन के । आपको यहाँ लग सकता है कि यह ऐसी कोई खास बात नहीं। पर असल में यह एक और ही मुद्दा है। जो मिर संगीत परंपरा की वर्तमान स्थिति का एक और कारक भी है। श्रोताओं के इस साँस्कृतिकरण **(Sanskritization)** की पहलू से मिर समुदाय पर पड़ता एक संकटमयी प्रभाव है।

मिर पारंपरिक श्रोता की कमी में यह भी एक अहम कारण है एवं अन्य कारण के आसार भी कुछ यूं हैं कि जैसे मिर ग्रामों में आपसी भूगौलीक दूरी का होना जो आज के वर्तमान वायस्तताओं में अधिक जान पड़ने लगती है। । कृषिकार्य के पूर्व एवं पश्चात जिजीविषा के अनुसंधान में अन्य कार्य में जुटना। जिसकी वजह से स्थानीय मिर परिवारों में आपसी संवाद का अभाव अपना पैर और भी आसानी से पसारता है। ठीक ऐसे ही समूचे मिर समुदाय आपसी मेलजोल के बहानो की अनियमितता का गहरा होना।

इस अनियमितता से मिरों के एक परिवार से दूसरे परिवार में संवाद का अभाव फैलता जा रहा है। इसी प्रकार मिर के एक ग्राम से दूसरे ग्राम के मध्य भी यही असंवाद की स्थिति बढ़ रही है। इस स्थिती को यह कहा जा सकता है कि मिर समुदाय का अपना कोई सांगठनिक ढांचा मजबूत नहीं है। जहां से एकरसता के साथ मिर समुदाय मिर संगीत को मजबूती प्रदान करे।

मिर समुदाय का अपना कोई सामुदायिक अनुष्ठानिक मेल मिलाप का ढांचा जरूरु होगा पर मुख्य रूप से संगीत संबंधी कितने होंगे। जिस मिलाप के केंद्र में संगीत हो। इस प्रकार के एकांतवादी घटनाएँ कितनी हैं। इसमें मुझे खास तरह से विश्वास तो नहीं लेकिन यह किसी प्रकार के अभ्यास में सामूहिक मौका जरूर बनाती हैं। इस तरह का समूहिक माहौल समुदायिक किसी अनुष्ठान जैसे निकाह आदि में इकट्ठे होना तो दिखता हैं। जो ज़रूर संगीत चर्चा का एक मुख्य हिस्सा का रूप लेती होगी। व्यावस्थित रूप से संगीत के लिए इकट्ठे होना। एक केन्द्रित विषय के लिए आपस में विमर्श मग्न होना। कुछ और ही प्रभाव फैलाता है।

मिर परिवार पर धार्मिक रूढ़ियों के लिए कट्टरों द्वारा धार्मिक अनुशासन बनाना। बच्चों के शिक्षा के प्रति अजागरूकता एवं जीविकोपार्जन के भागीदारी में बच्चों का धोरों (रेतीला स्थान जहां रेत के ऊंचे नीचे टीले हों) में घरेलू पशुओं को चराना और ईंधन इकट्ठा करने जैसी दिनचर्यायें भी एक और कारक है। जो पारंपरिक संगीत की अनियमितता के साथ – साथ अभ्यास परक माहौल को पैदा नहीं करने देतीं हैं। जिससे शिक्षा और जीवन संदर्भ एवं संगीत परंपरा और इस परंपरा के संबंध को लेकर एक सुनसान द्वंध का प्रसार समुदाय में स्पष्ट परिलक्षित होता है। इस परिलक्षण में राज्य और समुदाय के संबंध में एक वृहद खाई बनी हुई है। इसका यह एक अचूक प्रमाण है। जो पारंपरिक समुदाय से उसकी पारंपरिक संगीत धरोहर को अनिश्चित काल के लिए विलग करने पर आतुर है। समुदाय के आगे बढ़ने के अवसरों को राज्य अनदेखी कर रहा हैं। और एक प्रबल कारण दूसरा है कि विकास धारा में ज़िंदा रहने के जद्दोजहद में समुदाय अपने पारंपरिक संगीत अभ्यास के प्रतिकुलन में बढ़ता ही जा रहा है।

इनकी दूसरी पीढ़ी भी इन अदृश्य संघर्षों के मध्य एक और डिजिटल साँस्कृतिकरण **(Sanskritization) में** झूलते हुए आज के प्रतिकूलित स्थिति की दहलीज़ पर आ खड़े हुए हैं। मिर समुदाय के क्रमिक विकास में आयी स्थिरता की यहाँ एक तहकीक़ात कर रहा हूँ। ताकि मिर समुदाय और इनके श्रोताओं के समुदाय का एक समूचा जायज़ा सामने दिखाई पड़े। ताकि समुदाय के संगीतिय प्रतिकूलनता से दो-चार होने के लिए मार्ग को अनुसंधानित किया जा सकें।

मिरवाला समुदाय से जुड़ाव का फ़लसफ़ा

राजस्थान के बीकानेर जिले के ग्राम क्षेत्रों व तहसील क्षेत्रों के मिर समुदाय के विस्तारिकरण के सूत्रपात का आग़ाज़ राहुल घई के द्वारा किया गया। राहुल इन्ही इलाकों में किसी गैर सरकारी ग्राम संस्थान से जुड़े हुए थे। समय-समय पर बाबा फरीद के क़लाम और बुल्ले शाह की काफियाँ सुनने पुगल तहसील आया करते। घटनाओं के क्रम व सूत्रिकरण के लिए अब यहाँ मैं एक कयास लगा रहा हूँ। राहुल और मिर बार-बार मिलते रहे हैं और इस संगीत धरोहर को प्रकाश में लाने व इसको संबल देने के लिए राहुल ने संस्था इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स से शुरुआती संपर्क साध एक सूत्रधार की भूमिका निर्वहन की है।

जिससे आई. एफ. ए. मिर समुदाय के पारंपरिक संगीतिय धरोहर के साथ संवहनीयता को स्कौफ़फोल्डिंग (Scaffolding) बनने के फ़लसफ़ा से मिर समुदाय के साथ एक कड़ी बनी है। मिर समुदाय के पारंपरिक संगीत धरोहर संवर्धन के लिए प्राथमिक परियोजना का संचालन संस्था ने किया है। मिर सामुदायिक गतिशीलता में यह एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक निर्णय रहा है। इसमें क्रमवार तरीके में मैं भी मिर समुदाय और इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स के मध्य एक सूत्रधर के रूप से जुड़ पाया।

इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स के जुड़ाव से मिर समुदाय में अपने संगीत धरोहर के प्रति विश्वास और भी गहरा हुआ है। मिर परिवारों के आस-पाड़ोस में एक सकारात्मक संबंध स्थापित होने आरंभ हुए है। जो इस समुदाय के संगीतिय अभ्यास के प्रतिकूलन से मुखोमुखी होकर दो –चार करती है। इन्ही क्रमों से समुदाय की अनुकूलनता को प्रवाहित करने की दिशा में इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स के साथ मीर सामुदाय का सफ़र आरंभ होता है।

मिर सामुदायिक संगीत और इसका विस्तारिकरण

मिर समुदाय को विस्तारित करने की दिशा में इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बैंगलोर ने तीन महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। मिर समुदाय और इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स के साथ चर्चाओं में जाना गया कि इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स और मिर समुदाय के सर्वप्रथम सूत्रधार राहुल घई जी रहे हैं। जिनके मार्गदर्शन में इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बैंगलोर ने रोही रंग नाम के एक मासिक लघु प्रशिक्षण परियोजना के साथ मिर समुदाय के विस्तारण के कार्य का आग़ाज़ किया। दूसरा विस्तार कार्यरूपी प्रशिक्षण परियोजना संस्था ने मिर समुदाय के कई ग्राम्ञ्चलों में सन् 2010 के अगस्त से अक्टूबर माह तक किया। इसमें स्थानीय उस्ताद स्थानीय शागिर्दों को प्रशिक्षण देते और इनको प्रस्तुतियों के लिए तैयार करते। एवं तीसरे चरण के विस्तारण कार्य के मंथन में लगभग पाँच से छह वर्ष लगे और इसकी शुरुआत सितंबर 2015 सन् में की गयी।

मिर संगीतिय परंपरा के विस्तारण एवं स्थापन में प्रथम चरण के अलावा बाकी के दोनों चरणो एवं इनकी प्रक्रियायों में मैं स्व साक्षी रहा हूँ। इन दोनों चरणों के कड़ियों से कड़ियों को जोड़ कर मैं यहाँ इस आलेख में विस्तृत रूप से चर्चा कर रहा हूँ। जो मिर समुदाय के साथ जुड़ाव के क्रमिक प्रगति का एक आलेख चित्र बनाता है। जिससे मिर समुदाय के विस्तारिकरण के क्रमवार प्रवाह को जाना जा सके इसको विश्लेषित किया जा सके। इन सिलसिलेवार जुड़ाव का विस्तारित वर्णन कुछ इस प्रकार से है।

मिरवाला समुदाय के साथ जुड़ाव का सिलसिला : प्रथम चरण

परियोजना : रोही रंग

मिर समुदाय के साथ रोही –रंग के नाम से बीकानेर के एक और तहसील पुगल में संभावित सन् 2007 में लगभग चार माह के शुरुआती परियोजना का आरंभ किया गया। इस परियोजना की प्रकृति मुख्य रूप से यह थी कि मिर समुदाय से कुछ गायक और वादक एक स्थान पर एकत्र हो अपने संगीत परंपरा को विस्तारित करने के लिए व्यवस्थित तौर पर मंथन करें एवं एक-दूसरे को इस परंपरा का शिक्षण-प्रशिक्षण प्रदान करें। इस चरण में राहुल घई और इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स ने एक सूत्रपात घटाया। इस परियोजना से एकत्र हुए विचारों को ध्यान में रख कर आगामी परियोजना बाबा फरीद रंग मिर शिविर एवं बाबा फरीद रंग मिर सम्मेलन के लिए योजना बनाई गयी।

इस प्रथम चरण के परियोजना रोही –रंग के बाद यानि की दूसरे चरण की परियोजना के तहत इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स के माध्यम से मेरी मुलाकात मिर समुदाय के साथ हुई और बाद के चरणों में प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा।

मिरवाला समुदाय के साथ जुड़ाव का सिलसिला : द्वितीय चरण

परियोजना : बाबा फरीद रंग मिर शिविर एवं बाबा फरीद रंग मिर सम्मेलन

मेरी अगली यात्रा के लिए हावड़ा से बीकानेर की ट्रेन में बैठा। खिड़की के बाहर से बारिश की सौंधी महक अपनी लहर दौड़ा रही थी। कुछ नयी घटनाओं से मुलाक़ात होने के क्रम में एवं इन सब बेबाक दौड़ती चिंताओं में कुछ छुटता भी जा रहा है। कुछ नतुन घटना के अनुसंधान में। खिड़की में आगे से आती हुई और पीछे छूटती हुई दुनिया भी नज़र आती रही। यह सब तो इस सफर में था ही पर इसके साथ स्टेशनों की दूरियों के मध्य एक बहुत अकेला प्रश्न दौड़ता रहा। आखिर मैं जहां जा रहा हूँ। वहाँ मिर हैं। ठीक है! पर ये मिर आखिर हैं कौन? यानि के मिर कौन हैं का पहला प्रश्न मस्तिष्क के रगों में तैरता रहा। जिसके एक कड़ी के संधान में एक लंबा वक़्त गुज़र गया। जिसके बारे में विस्तार इस अध्याय में एवं बाद के चरणों में ज़िक्र किया जाना है कि मिर सफा (परिष्कार) (सूफी शब्द की उत्पत्ति का एक मत) के मायनों से उदभावित हुए। सूफी कवियों के काफ़ियों-कलामों एवं भजनों के सूत्रधार हैं। जो अत्यंत महागतिमान दुनिया में जिस्मानी से रूहानी फिक्र को कुदरत की गोद में खोजने और बुनने के लिए श्रोताओं को प्रभावित करते हैं।

इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बैंगलोर ने इस खोज में ऊर्जा का एक स्वरूप बन महत्वपूर्ण पहल की है। मैं इस खोज और मिर कुन्बे के अभ्युत्थान में इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बैंगलोर के साथ एक कड़ी बन पाया हूँ। तीन माह चले इस द्वितीय चरण के विस्तारण परियोजना के अंतिम दिनों अक्सर गा उठता था। “जंगल कलड़ी विच कीवे यार बाँय गुज़ाराँ”।

अगस्त -अक्टूबर 2010 के कार्य की प्रकृति

बीकानेर जिले के मुख्यतः पुगल , खजुवाला , एक पी बी, चार के.पि. डी रांवला, रामड़ा, सत्तासर एवं छत्तरगढ़ आदि स्थानों में मिर कुन्बा अपने संगीतीय परंपरा को जीविका और अभ्यास बनाए रखने के जद्दोजहद से जूझ रहे हैं। इन ग्रामों में प्रशिक्षण शिविर का प्रस्तावित कार्य योजना मुख्य रूप से छत्तरगढ़, चार के.पि. डी रांवला तथा एक पी. बी. रहा है। इन तीन मुख्य स्थानों पर मिर समुदाय के उस्ताद एवं शागिर्द के साथ तीन शिविरों की संरचना की गयी। इन संरचित शिविरों में बीस-बीस मिर सदस्य का समूह बनाया गया। मिरों के इस प्रशिक्षण शिविरों का शीर्षक मिर समुदाय के सदस्यों ने ही तय किया। इस प्रशिक्षण शिविर का नाम सूफी कवि बाबा फरीद के नाम से जोड़ कर 'बाबा फरीद रंग मिर शिविर' रखा गया। इस शिविर के लिए शिक्षण प्रशिक्षण की कार्य योजना भी तय की गयी। जिसमें उस्तादों का अपना अभ्यास, आगंतुक एवं पुराने उस्तादों का राग और क़लाम का अभ्यास और शागिर्दों को प्रशिक्षण देना मुख्य गतिविधियां बनी। इसके साथ उस्तादों और शागिर्दों का एक न्यूनतम मानदेय भी पक्का किया गया। इस शिविरों में एक और खास बात रही कि प्रत्येक शिविर में एक –एक स्थानीय श्रोता का भी चयन किया गया। जो इन शिविरों में प्रशिक्षणों एवं सामूहिक सहमतियों के दौरान अपनी भागीदारी पक्की करेंगे और इस प्रक्रिया से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहें। क्योंकि मिर श्रोता भी कृषि कारण से अपने दूर कृषि खेतों के इर्द गिर्द बसने लगे हैं। श्रोताओं की ऐसी एक लंबी संख्या है। जो अब गाँव के भूगौलीक चुनौतियों से निपटने के लिए सीधे शहर या अन्य उपशहर में बसोबास को मान्यता देने लगे हैं। एवं बगैर मिर परंपरा से प्रत्यक्ष जुड़ाव की जगह विधुतीय संगीत यंत्रो से अपने पारंपरिक तथा अवसरी अनुष्ठानों को पूरा कर लेते हैं। जो मिर परंपरा के लिए एक संकट की स्थिति पैदा कर सकती है। जो मिर परंपरा के अवसान का एक और कारण बन सकती है। स्थानीय श्रोताओं के जुडने से इन शिविरों में संवाद प्रवाह को ऊर्जा मिल सकेगी। इन प्रक्रियाओं के साथ प्रशिक्षण शिविर को आरंभ किया गया। वर्ष 2010 के माह अगस्त की पहली तारीख से मिर प्रशिक्षण शिविर की शुरुआत की गयी।

मिर प्रशिक्षण शिविर का सिलसिला एवं सामुदायिक तरीक़ा

परिदृश्य

तीन अलग –अलग भूगौलीक क्षेत्रों में विविध संगीतीय मिर परंपरा के आपसी प्रशिक्षण के लिए श्रोता अथवा पड़ोसियों के निजी कक्षों को प्रशिक्षण हेतु उपयोग में लिया गया। जिसके एवज में प्रत्येक माह कुछ न्यूनतम किराए का भी बंदोबस्त किया गया। इन तीनों शिविर में प्रशिक्षण की औपचारिक समय –सीमा निर्धारीत नहीं था। असल में जब नींद खुले या जब नींद आने लगे के मध्य का पूरा का पूरा समय प्रत्येक शिविर में प्रशिक्षण की आवाज़ सुनाई पड़ती रहती। चाहे वह रात का मध्य पहर हो अथवा दिन का मध्य पहर। अगर किसी को कलात्मक अभ्यास कोई तरीक़ा खोजना हो तो मेरे विचार में यह एक अचूक तरीक़ा हो सकता है। सामुदायिक तरीकों में हर कुन्बे के अपने किसी न किसी द्वंद्ध की रुचियाँ भी विविध रूप की होती हैं। यह मिर समुदाय जो कि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष एक पारिवारिक दिशा में सभी एक दूसरे के ताल्लुकदार भी है। इस समुदाय के द्वंद्ध की रुचियों में मुख्यतः मिर पारंपरिक संगीतीय रीति के अनुष्ठाणिक प्रदर्शन में अधिकत्तर अगुआई के मुद्दे रहे हैं। जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष मिर प्रशिक्षण शिविरों में पड़ते रहे हैं एवं प्रशिक्षण की आपाधापी में यह समेकित नहीं होते थे। वरन यह आपसी द्वंद्ध मुद्दे प्रशिक्षण की भीड़ में जस के तस ठहर जाते थे। एवं इसका प्रभाव संगीतीय अनुष्ठाणिक प्रदर्शन के दौरान और पूर्व अथवा इसके पश्चात अवश्य पड़ता रहा है। इनका किसी भी बात के बहाने आपस में रूठ जाना। ख़ैर इसका विवेचन सामुदायिक सामाजिक मनोवैज्ञानिक फल्सफों की सहायता से किया जा सकता है। तो पाएंगे कि सामुदायिक समरसता की दिशा में विविधिता कई बार द्वंद तो बनती ही है परंतु इसके द्वंद की रुचियाँ सामुदायिक मूल्यों को अघातीत नहीं ही करने चाहिए। एवं इन समुदायों में भी विविधिता को सुनिश्चित करना चाहिए तथा इसका सम्मान और आदर होना चाहिए।

मिर समुदाय के मध्य आपसी द्वंद भी लगातार बने ही रहते हैं। मिरों के संदर्भ में इसको एक उदाहरण से समझा जा सकता है। मानो एक पेंड से सभी को फल इकठ्ठा करने हो। और इसमें जो स्थिति बनेगी लगभग वैसी मिलती जुलती स्थिति मिर समुदाय के आपसी द्वंदों के रुचियों की जान पड़ती है। खास बात यह है कि यह आपसी द्वंद रूचियों में ये गैर संवादिक प्रक्रिया के स्थान पर आपसी समुदाय में आपसी संवाद की प्रक्रिया को प्रवाह देते है। जो इस द्वंद के समेकन के लिए बहुत प्रभावी, कारगर एवं खास बात है। जो सामुदायिक मूल्यों को उर्वरा बनाती है।

मिर सामुदायिक संगीतीय परंपरा का अभ्यास भाषायी विविधिता लिए हुए होती है। इस विविधिता को उजागर करने के लिए इनके संगीतीय प्रदर्शन की भाषा पर हम ध्यान दे सकते है। मिर समुदाय की आपसी बोलचाल की भाषा बीकानेरी मारवाड़ी भाषा ही है। इस भाषा में ही ये अपनी दिनचर्या का निर्वहन भी करते है। भाषायी इस एकता में विभिन्नता तब नज़र आती है। जब मिर समुदाय के गायक गाते हुए सुनाई पड़ते है। छत्तरगढ़ और 1 पीबी में मुल्तानी शेरायंकी जिसमें फारसी-मारवाड़ी-पंजाबी-उर्दू और कहीं कहीं अरबी तहजीबों के दस्तखत दिखाई देते हैं। 4 केपिडी रांवला में पंजाबी काफियाँ यहाँ अभ्यास एवं प्रशिक्षण में खास हैं। इन गायकों के साथ ही साथ वादकों के यंत्रों की भी अपनी खास विविधिता है। ये विविधिता हमको यहाँ के वादको में जब दिखता है। जब यहाँ प्राचीन दौर के मश्क़ (बैगपाइप) और अल्गोज़ा भी दिखाई पड़ते हैं। इसके साथ ही साथ ढ़ोल और तबला और हारमोनियम जो मिर गायकी और वादक के लिए भी बहुत ही अनिवार्य यंत्र हैं। जो यहाँ अच्छी ख़ासी संख्या में दिखाई पड़ते हैं। इन संगीत यंत्र कि यात्रा में जो मिरों से छूट गया वह है तार वाले यंत्र जिसमें खास कर सारंगी का नाम हो सकता है। पर जिन यंत्रो के साथ मिर अभी भी यात्राशुदा हैं उनके साथ यह बात स्थापित भी कि जा सकती है कि कई सामाजिक सिद्धांतों में से एक सिधान्त यहाँ भी जान पड़ता है एकता में विविधिता।

स्थानीय मिर कमेटी

मिर प्रशिक्षण के तीन शिविरों के दौरान मिर समुदाय में मिर विस्तारिकरण पर लगातार संवाद एवं विचार विमर्श के लिए मिर कमेटी की तरह एक उपाय सामने आने लगा। इस मुद्दे पर संभागी शिविरों में तमाम मंथनों के बाद मिर कमेटी की अवश्यकता महसूस की गयी और मिर कमेटी के कार्यपद्धति को सामूहिक रूप से तय किया गया।

मिर कमेटी के तय किए गए कार्यों में निम्न प्रकार के बिन्दुओं पर सामूहिक सहमतियाँ इकट्ठी कि गईं :

1. श्रोताओं को मिर संगीतीय परंपरा को बढ़ावा देने के लिए मिर कार्यक्रमों में प्रत्यक्ष रूप से जुड़ अनुशंसा के अवसर बनाना
2. मिर संवर्धन की दिशा के लिए स्थानीय एवं गैर स्थानीय श्रोताओं से निरंतर संवाद किया जाना
3. श्रोताओं का मिर परंपरा से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहने के लिए निरंतर कार्यक्रमों की श्रिन्खला को आगे बढ़ाना
4. उर्स मुबारक आयोजित करने वाले दरगाहों से संपर्क साधना ताकि यहाँ भी मिर कार्यक्रमों को जोड़ा जा सके
5. उर्स प्रबंधन समितियों के साथ मिल कर मिर परंपरा व विचार –विमर्श व संगीत अनुष्ठान के लिए निरंतर स्थान बनाना
6. मिर परंपरा के संगीतिय अनुष्ठान तथा इस पर निरंतर विचार विमर्श के लिए ग्राम चौपालों के साथ भी संपर्क करना
7. स्थानीय प्रसाशनिकों के साथ मिर सामुदायिक स्थितियों से रूबरू के लिए जन बैठकों में भी शामिल होना
8. मिर परंपरा के प्रसार के दिशा में प्रशासनिक बैठकों का आयोजन भी करवाना

इन मुख्य ज़िम्मेदारियों के साथ मिर समुदाय में मिर कमेटी की अवधारणा अभी बहुत नयी ही थी। इस नए नवेले मिर कमेटी में पुगल से नज़रे खान व अब्दुल जब्बार, 1 पीबी से बस्सु खान एवं 4 के.पि.डी. से वारिस अली मुख्य सदस्य रहे हैं। इसके बाद वर्तमान में इस मिर कमेटी में काफी बदलाव भी हुए। इन बदलाव के प्रभावों तथा कारकों पर आगे आने वाले तृतीय चरण के परियोजना के प्रसार के चरण में विस्तृत विवेचना किया जाएगा।

स्थानीय मिर कमेटी से परियोजना में नए सार्थक उपलब्धियां हासिल हुई

इसी क्रम में मिर कमेटी के निरंतर मुलाक़ातों से दो उर्स मुबारकों पर मिर कार्यकर्म का आयोजन भी किया गया। यह कार्यक्रम मौलवीयों के साथ निरंतर संवाद की प्रक्रिया से ही रूपायित हो पाई है। जो मिर कमेटी और श्रोताओं के मिले जुले प्रयास का बहुत ही सार्थक चरण रहा। उर्स में मिर कार्यक्रम दो स्थानो के दरगाहों पर आयोजित किया गया। 7 सितंबर 2010 को रांवला एवं 8 सितंबर 2010 1 पीबी दरगाह में आयोजित किया गया। इन दोनों उर्स कार्यक्रमों में बस्सु खान (1 पीबी), सत्तार खान (1 पीबी), वारिस अली (4 केपीडि रांवला), रियाज अली (4 केपीडि रांवला), अब्दुल खान (पुगल), नासिर खान (सत्तासर) बसाय खान (सत्तासर) पहली बार मुख्य रूप से शामिल रहे हैं।

इन उर्स मुबारकों में हिस्सा लेने से मिर आलमों में एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ। इस नवीन ऊर्जा के साथ मिर समुदाय ने उर्स भागीदारी से और भी नयी संभावनाएँ बना पाये। जिससे दूर-दूर के दरगाहों के साथ भी मिर संगीत का संबंध बनेगा का एक आसार नज़र आने लगा। एवं यहाँ से मिर परंपरा को नए श्रोता भी मिल सकेंगे।
मिर कमेटी के इस सार्थक पहल से प्राप्त इन उपलब्धियों को आधार बनाकर परियोजना में मिर समुदाय को विस्तारित करने के अवसरों को फलीभूत करने की दिशा में मिर कमेटी की बैठकों को कई बार आयोजित किया।

स्थानीय मिर कमेटी से एक और नयी दिशा में शुरुआत

मिर कमेटी के इस सार्थक पहल को मजबूत बनाने के लिए मिर गायकों, वादकों और श्रोताओं को सामूहिक तौर पर इकठ्ठा कर निम्न दिशा में बैठकों का आयोजन की गया जिसमें

1. मिर और श्रोता संबंध
2. नए श्रोताओं तक पहुंचना के लिए दरगाहों के साथ मिलकर मिर कार्यक्रम आयोजन करना।
3. इन जैसे मुद्दों का व्यवस्थित प्रसार तथा मिर परंपरा का सामूहिक प्रदर्शन कर आस-पड़ोस में मिर परंपरा से परिचय
4. मिर समुदाय का संगठनात्मक ढांचे का विकास
5. मिर समुदाय का एक स्थानोय केंद्र स्थापित करना
6. मिर समुदाय के बच्चों का मिर संगीतीय परंपरा में प्रशिक्षण व इनकी शिक्षा के चिंताओं पर खुल कर विमर्श
7. मिर परंपरा का सामूहिक प्रस्तुति के लिए बाबा फरीद रंग मीर सम्मेलन का आयोजन
8. मिर समुदाय के संगठनात्म्क ढांचे का निर्माण पर सामूहिक विमर्श लिए बाबा फरीद रंग मीर सम्मेलन का आयोजन

इन जैसे मुद्दों के साथ मिर कमेटी के आगे की पड़ाव के लिए हो चुके बैठकों में कमेटी सदस्यों ने गंभीर मंथन के पश्चात महत्वपूर्ण निर्णयों को आगे बढ़ाया जिसके मुख्य बिन्दुओं को ऊपर साझा किया गया। मिर प्रशिक्षण शिविर के समापन कार्यक्रम के लिए सम्मेलन का निर्णय अपने आप में बहुत अनोखा रहा है और बाद में यह मिर समुदाय के विस्तारण की दिशा में एक ऐतिहासिक निर्णय के रूप में में उभरा। तीनों स्थानों पर हुए मिर प्रशिक्षण शिविरों में श्रोता सह लगभग 23 सदस्यों ने प्रत्यक्ष हिस्सा लिया और मिर सम्मेलन में अपने-अपने हुनर के साथ शिरकत भी की।

मिर प्रशिक्षण शिविर के संभागियों की सुची निम्न प्रकार रही है जो तयशुदा तरीके से स्थानीय शिविरों में शामिल रहे:
(यह सुची सन् 2010 के मिर प्रशिक्षण शिविर परियोजना की है।)

क्रम	नाम	उम्र	लिंग	क्षेत्र	निवासी
1.	अब्दुल जब्बार	40	पु	उस्ताद तबला वादक	पुगल
2.	बस्सु खान	29	पु	उस्ताद सेराईंकी गायक	1 पीबी
3.	नज़रे खान	52	पु	उस्ताद मश्क़ वादक	पुगल
4.	अंतर खान	46	पु	उस्ताद कबीर पंथी गायक	रामड़ा
5.	सत्तार खान	28	पु	शागिर्द तबला वादक	1 पीबी
6.	अब्दुल खान	17	पु	शागिर्द गायक	1पीबी
7.	मुश्ताक़ खान	19	पु	शागिर्द गायक	1पीबी
8.	कालू खान	12	पु	शागिर्द गायक	1 पीबी
9.	हाशिम खान	12	पु	शागिर्द गायक	1 पीबी
10.	अब्दुल रज़्ज़ाक़	26	पु	शागिर्द गायक	कंकराला
11.	रियाज़ अली	24	पु	शागिर्द गायक	4 केपिडी
12.	मुनीर खान	23	पु	शागिर्द गायक	कंकराला
13.	अमीन खान	23	पु	रसोइया	1पीबी
14.	शब्बान खान	40	पु	श्रोता	1पीबी
15.	वारिस अली	49	पु	काफियाँ उस्ताद	4 केपीड़ी
16.	नासिर खान	60	पु	उस्ताद तबला वादक	सत्तासर
17.	बसाय खान	42	पु	शागिर्द ढोलक वादक	सत्तासर
18.	फत्तूखान	37	पु	शागिर्द ढोलक वादक	पुगल
19.	अली शेर	17	पु	शागिर्द तबला वादक	4 केपीडी
20.	अब्दुल रज़्ज़ाक	20	पु	शागिर्द	4 केपिडी
21.	मरियम	45	म	रसोइया	4 केपिडी
22.	मंजूर खान	63	पु	उस्ताद तबला वादक	छत्तरगढ़
23.	मिट्ठन खान	58	पु	उस्ताद गायक	छत्तरगढ़

मिर प्रशिक्षण शिविर

शिविर उपलब्धि एक :

मिर समुदाय से मिर प्रशिक्षण शिविर को घनिष्ठ रूप से जोड़ने के लिए मिर कमेटी ने मुख्य भूमिका निभाई। मिर कमेटी के स्थानीय सदस्यों ने मिर कमेटी से हुई उपलब्धियों को आगे बढ़ाने की दिशा में कमेटी से भी वृहद एक संगठनात्मक ढांचे की संलकल्पना बनाई। इस संकल्पना में मिर कमेटी के सदस्यों के साथ अन्य गाँव के मिर सदस्यों इनके श्रोताओं और स्थानीय प्रशासन के सदस्यों को भी जोड़ा गया। इस निर्णय से मिर परंपरा के खासियत को अच्छा खासा प्रसार मिला। एवं स्थानीय तौर पर मिर कलाकारों की एक मजबूत पकड़ बनी।

शिविर उपलब्धि दो :

स्थानीय दरगाहों में मिर पारंपरिक संगीत कार्यक्रमों का होना एवं दरगाह उर्स समितियों के साथ मैत्री पूर्ण संबंध स्थापित होना। इससे मिर आलमों के पारंपरिक अभ्यास को मौलवी व अन्य धर्मगुरुओं के मध्य भी प्रतिष्ठा मिलती है। इस प्रक्रिया के सार्थक प्रभाव से अन्य मिर आलमों के परिवार भी इस परियोजना से जुडने लगे। जो किन्ही धर्मचारणों के कारण किसी भी प्रकार के गीत-संगीत के कार्यक्रमों में शिरकत नहीं करते थे। अब अच्छी ख़ासी संख्या में इन रूढ़ियों के परे भी देखने समझने के अवसरों को सँजोये। इस मिर परियोजना से जुड़े हैं। इनमें से कई मिर सामुदायिक सदस्य व स्थानीय श्रोताओं ने मिर संगीत परंपरा की खासियत और समुदाय में इसको बरकरार रखने के लिए अपने अभिभाषण को भी मिर सम्मेलन के मंच से समूहिक साझा किया।

शिविर उपलब्धि तीन:

मिर कमेटी को मिर सामुदायिक संगठन के ढांचे में तब्दील करने की संकल्पना में मिर कमेटी को मोर समुदाय का भारी बहुमत मिला। इसका नतीजा यह रहा की बाबा फरीद रंग मीर सम्मेलन में अच्छी ख़ासी संख्या में स्थानीय जन उपस्थित हो पाये।

बाबा फरीद रंग मीर सम्मेलन आयोजन पूर्व तैयारी

इस सम्मेलन के आयोजन एवं प्रबंधन के लिए मिर कमेटी एवं मिर समुदाय के अन्य उस्ताद शागिर्द इकट्ठे हुए। इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स की सुमना चन्द्रशेखर व मिर समुदाय के मित्र राहुल घई भी मेरे साथ इस अवसर पर उपस्थित हुए थे। बहुत मंथन के बाद इस बैठक का नतीजा यह था कि वर्ष 2010 अक्टूबर माह के अंत में 1 पीबी में सम्मेलन का आयोजन करना तय किया गया। मिर कमेटी अपने जोशो- होश में सम्मेलन को आयोजित करने के लिए कवायद करने लगी।

बाबा फरीद रंग मिर सम्मेलन का शीर्षक मिर कमेटी ने ही तय किया और बीकानेर जिले के बज्जु, कंकराला, राणेवाला, मकड़ासर, कोलायात, खजुवाला , छत्तरगढ़, रांवला, एक पीबी, सत्तासर, कैला, पुगल एवं रामडा आदि गाँवों से मिर तथा इनके श्रोताओं को इस सम्मेलन में आमंत्रित किये जाने की कमेटी ने व्यवस्थित योजना बनाई। यह अनुमान लगाया गया की इस सम्मेलन में लगभग 350 -400 लोगों के उपस्थित होने कि संभावना बन पड़ी।

आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स के सुझाव पर कोलकाता से बाउल एवं फकीर गायकों की एक छोटी टोली भी यहाँ आने के लिए तैयार हो गयी। आई फ ए के सुमना चन्द्रशेखर को भी घट्टम प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया। सम्मेलन में सामुदायिक सांगठनिक ढांचे के विमर्श के लिए देश के अन्य सामुदायिक ढांचे पर कार्य करने वाले सामुदायिक अनुभवी कार्यकर्ताओं एवं चिंतकों में आदियोग (लखनऊ), भान साहू (छत्तीसगढ़), गिरिराज किराडू (सीकर), अजित बहादुर (इलाहाबाद से स्वैच्छिक भागीदारी) अभिषेक (कोलकाता –बांग्ला नाटक डॉट कॉम प्रतिनिधि), बाउल गायक वादक दल (पश्चिम बंगाल), दामोदर जी (बीकानेर) एवं बीकानेर के रंगकर्मी सुरेश आचार्या, सुनील आचार्या एवं आशीष आचार्या भी आमंत्रित किए गए। इन सब को मिलाकर इस सम्मेलन की विविधिता में काफी इजाफा हुआ।

समूचे सम्मेलन के औडियो को रिकॉर्ड करने बीकानेर से अनुभवी स्टुडियो के सेटअप को मानदेय सह अम्नत्रित किया गया। ताकि इस कार्यक्रम के प्रत्येक कड़ी का आडियों रिकॉर्ड बनाया जा सके। बीकानेर से ही टेंटके साजो समान भी बन्दोबस्त किए गए। मिर गायकी परंपरा में महिलाएं सामूहिक प्रस्तुति करती तो दिखाई नहीं दीं लेकिन इस मिर सम्मेलन के मंच के लिए यहाँ के सामुदायिक राजकीय प्राइमरी विद्यालय के मैदान में लगभग 30 फिट लंबा और बीस फिट चौड़ा एवं तीन फिट ऊंचा एक मिट्टी का मंच बनाया।

इस मंच को ऐसे सजाया गया मानो समूचा मिर परिवार एक साथ झूम उठा हो अपने विस्तार के गीत का आग़ाज़ कर रहा हो। लंबे समय के बाद इस सम्मेलन के अनुभवों को एक नए सिरे से कलम बद्ध कर रहा हूँ। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानों उन दिनों का दृश्य इस पेज पर मेरे सामने जैसे घट रहा हो। किस तरह मिर समुदाय की कढ़ाई –बुनाई से तैयार रंगीन रालियों, हाथ पंखों आदि हस्त दस्तकारी के दैनिक उपयोग की वस्तुओं से मंच की चौहद्दी को निखारा गया है। जहां मिर आलम और इनके मेहमान अपना प्रदर्शन करेंगे व अपने विचार रखेंगे।

मिर कमेटी ने इधर समूचे कार्यक्रम की सुची को तैयार कर लिया एवं आगंतुक मेहमानों तक पहुंचाने के लिए मिर समुदाय की तरफ से एक आमंत्रण भी मैंने लिखा। जो पहली बार ही मैंने उर्दू ज़ुबान में लगभग चार पंक्तियों को वाक्य विन्यास में पिरोया है। जो मिर समुदाय के एवं मिर कमेटी के सदस्यों को काफी पसंद आया। इस आमंत्रण को मिर श्रोताओं –पड़ोसियों, मित्र-बंधुओं एवं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों तक वितरित किया गया। मिर सम्मेलन में इस सभी की उपस्थिती को सुनिश्चित करने का एक औपचारिक प्रयास किया गया।

बाबा फरीद रंग मिर सम्मेलन में मंचीय कार्यक्रमों की पूर्व तैयारी के साथ कार्यक्रम एवं इसके क्रम की एक पूर्व सुची भी निगाह–ए- आम की गयी।

बाबा फरीद रंग मिर सम्मेलन की कार्यक्रम सुची		
क्रम	कार्यक्रम/व्यक्ति	विवरण
1.	27/8/2010	मिर श्रोताओं, मेहमानों एवं कार्यकर्ताओं को इकट्ठा होना
2.	28/8/2010	बाबा फरीद रंग मिर सम्मेलन की शुरुआत प्रातः 11 बजे से आरंभ करना
3.	ख़ैरमकदम गीत	प्रातः 11 बजे: 1 पीबी, छत्तरगढ़ और 4केपीडी रांवला के द्वारा प्रस्तुत होना
मिर समुदाय एवं श्रोताओं की वर्तमान स्थिती पर चर्चा (जिन व्यक्तियों ने अपने विचार रखे)		कार्यक्रम उद्घोषक:आदियोग
4.	सत्तार खान	श्रोता पुगल –बीकानेर
5.	गोविंदराम	मिर मित्र –रिटायर्ड अध्यापक –नोखा –बीकानेर
6.	मिर आज़म खान	बज्जु –बीकानेर
7.	मिर अब्दुल जब्बार	तबला वादक उस्ताद, पुगल –बीकानेर
8.	मिर बस्सु खान	गायक उस्ताद, 1 पीबी –बीकानेर
9.	मिर नज़रे खान	मश्क़ वादक, पुगल –बीकानेर
10.	अंतर खान	कबीर गायक-रामड़ा-बीकानेर
11.	मिर वारिस अली	गायक उस्ताद, 4 केपीडी रांवला- बियाकनेर
12.	मिर रियाज़ अली	गायक शागिर्द , 4 केपीडी रांवला- बीकानेर
13.	मिर अली शेर	गायक शागिर्द , 4 केपीडी रांवला- बीकानेर
14.	मिर आरिफ खान	गायक शागिर्द , घडसाना –राजस्थान
15.	बेगम नूर	गायिका, 1 पीबी –बीकानेर
16.	शब्बान खान	श्रोता, 1 पीबी –बीकानेर
17.	खोइबर फ़क़ीर	बाउल गायक, पश्चिम बंगाल
18.	गिरिराज किराडु	आधुनिक कवि एवं सामुदायिक चिंतक
19.	अजीत बहादुर	सामाजिक कार्यकर्ता एवं पत्रकार
20.	भान साहू	सामाजिक कार्यकर्ता एवं पत्रकार
21.	सुमना चन्द्रशेखर	घट्टम वादक एवं इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स प्रतिनिधि
22.	राजकुमार रजक	रंगकर्मी एवं बाबा फरीद रंग शिविर तथा सम्मेलन सुगमकर्ता आई.एफ. ए. की तरफ से
23.	दामोदर जी	वीणा वादक एवं संगीत कार्यकर्ता –बीकानेर
24.	दोपहर भोजन	
25.	मिर समुदाय की सांगठनिक संरचना एवं वर्तमान स्थिति पर सामूहिक चर्चा	
26.	प्रस्तुति	मिर शिविर दलों की क्रमवार प्रस्तुति
27.	प्रस्तुति	बाउल संगीत प्रस्तुति (मंच परिचालना अभिषेक के द्वारा - बंगला नाटक डॉट कॉम के प्रतिनिधि)
28.	प्रस्तुति	शिविर के उस्तादों द्वारा खास तैयारियों की प्रस्तुति
29.	घट्टम प्रस्तुति	सुमना (इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दी आर्ट्स बैंगलोर –प्रतिनिधि)
30.	समापन घोषणा	आदियोग के द्वारा

बाबा फरीद रंग मीर सम्मेलन आयोजन

वर्ष 2010 के अक्टूबर माह की 28 तारीख को प्रातः 11 बजे आरंभ किया गया एवं बाबा फरीद रंग मिर सम्मेलन के कार्यक्रमों का सिलसिला अगली तारीख की सुबह 3 बजे तक चला। इस सिलसिले में तीन विशेष चरण मुख्य रूप से पहला चरण आमंत्रित किए गए मिर मित्रों और स्थानीय श्रोताओं एवं समुदाय के साथ विविध कार्य करने वाले सामाजिक कार्यकर्ताओं ने मिर समुदाय में सांगठानिक ढांचे की ज़रूरत और रूप रेखा पर विस्तृत अभिभाषण और संवाद किए। दूसरे चरण में मिर समुदाय के गायकों और वादकों ने अपने –अपने अनुसार अपने कला की प्रस्तुतियाँ की। तीसरे चरण में जो की शाम से रात के लगभग तीन बजे तक चला, इस चरण में मिर प्रशिक्षण शिविर के मिर शागिर्दों और उस्तादों ने अपनी प्रस्तुति रखी।

बाबा फरीद रंग मिर सम्मेलन के कार्यक्रमों के इस लड़ी में आरंभ मिर उस्ताद-शागिर्द के साथ ही साथ पश्चिम बंगाल के बाउल गायकों का और मिर समुदाय की एक महिला गायक का एक ही मंच पर समागम एवं जुगलबंदी प्रस्तुत हुई। इस कार्यक्रम में कबीर, बुल्लेशाह, बाबा फरीद, शाह हुसैन, अमीर खुसरो आदि के साथ- साथ बंगला के लालन व स्थानीय फकीरों और संतों की वाणियों के उपस्थित गायकों और वादकों ने सम्मेलन को सामूहिक रूप से एक मिश्र रंग प्रदान किया। इन क़ाफ़ियों –कलामों –रागों – के रंग में सुमना के द्वारा प्रस्तुत घट्टम के ध्वनि की भी भागीदारी रही। इन संगीतीय रंग पर्व में 1 पी. बी. के साथ उपस्थित श्रोताओं ने एक सामुदायिक सहभागिता बनाई इस सम्मेलन को सार्थक दिशा में प्रवाहित किया। जो हमेशा –हमेशा के लिए यहाँ इस सरज़मीन पर बरक़रार रहेगी और इस बाबा रंग मिर सम्मेलन के गीतों की कहानी को गुनगुनाती रहेगी।

इस सम्मेलन के आयोजन के दौरान कई छोटे –बड़े सामुदायिक और व्यक्तिगत द्वंद अटकलें बन अचानक सामने खड़ी हो गईं। इन अचानक दिखाई दिये जाने वाले अटकलों की मुख्य रूचियाँ थीं कि मिर प्रशिक्षण शिविर को और भी निरंतर किया जाए तभी इस सम्मेलन में हिस्सेदारी लिया जाएगा। यह वक्तव्य छत्तरगढ़ शिविर के मुख्य उस्ताद मिठ्ठन खान जी का था। मिठ्ठन खान जी इस बात पर ही अड़े हुए थे और अपने शिविर को प्रस्तुति स्थल पर आने से रोक रहे थे। इधर शिविर में शरीक हुए सभी संभागियों के लिए मिर सम्मेलन हेतु मिर पारंपरिक वेषभूषा की भी स्थानीय दर्जी से सिलाई कढ़ाई कारवाई जा चुकी थी। सम्मेलन की तमाम तैयारियों और मेहमानों की दुहाई देकर मिर कमेटी ने मिठ्ठन खान जी को समझा बुझा लिया की आखिर कोई संस्था कब तक शिविर चलाएगी। हम अपने संगीतिय परंपरा का परचम पुनः स्थापित कर सकें इसलिए ही तो इन मेज़बानों को यहा इकठ्ठा किया गया है। मिर संगीतिय परंपरा के भविष्य के लिए हम सभी फिक्रमंद हैं। इस वक़्त हमें एक साथ होने की ज़रूरत है। आगे बढ़ने की आवश्यकता है। सम्मेलन अवधि में तो मिठ्ठन खान जी समझ बुझ गए और सम्मेलन में अपने संगीतीय प्रतिभा पर खास कर अपनी आवाज़ पर गायकी पर काफी तारीफ़ें भी पायीं लेकिन मिठ्ठन खान जी अपने अलगाव की धुन में बोलते ही रहे। इस ज़िद् के कारण अब सामूहिक मिर कार्यक्रमों में शरीक न होकर अपने अलग मिर कार्यक्रमों में हिस्सेदारी लेते रहते हैं। इस प्रकार की घटना मिर समुदाय के विस्तारित होने की प्रक्रियाओं में एक अलग प्रकार का प्रभाव डालता है। हम सभी भरसक कोशिशों के साथ पुनः इनके जुड़ाव के आस में सदा अपेक्षाकृत रहेंगे। इन सभी विविध रंगों के साथ मिर समुदाय के संगीतीय परंपरा के अब तक के आधुनिक इतिहास में यह एक अनूठा और वृहद कार्यक्रम रहा है।

सम्मेलन से उपलब्धियां एवं सार्थकता

1- सामुदायिक सांगठानिक ढांचे की संरचना

सम्मेलन के दौरान मिर समुदाय की संगठनात्मक संरचना को समझने तथा इस पर विमर्श के लिए काफी लम्बा और गंभीर मंथन हुआ। मिर गाँव में अनुपातन लगभग पाँच परिवार से अधिक परिवार हैं। जो मिर संगीतिय परंपरा से अपनी जीविका एकत्र करते हैं। यह मिर गायक और वादक के पारंपरिक श्रोताओं के अलावा जो नए या अनियमित श्रोता है। उनके साथ मेहनताना मोल तोल कर अपना कार्यक्रम कर देते हैं। ठीक ऐसे ही अगर कहीं से मिर कार्यक्रम का आमंत्रण आया। तो साथ में जाने वाले सहायक गायकों और वादकों के उचित मानदेय के साथ समूह का मुखिया छेड़छाड़ या फिर कार्यक्रम में अपेक्षित सहायता न प्राप्त होने से कभी कभार आपसी दुर्व्यवहारों का होना। इससे समुदाय में मिर परिवारों के आपसी संबंध धूमिल हो रहे हैं। जिससे मिर समुदाय की नीव और भी अधिक डगमगाने लग सकती है। इन हरकतों को पीछे छोड़ने के लिए एवं मिर समुदाय में एक सांगठनिक ढांचा खींचने के लिए इस मंथन के साथ कुछ सामुदायिक पारस्परिकता को बरकरार रखने के लिए सामूहिक निर्णय भी लिए गए। जैसे की इस मिर संगठन के एक अंश में एक कमेटी अस्तित्व में तो है ही अगर किन्ही कारणों से आपसी मतभेद होता है। तो यहाँ सामूहिक तौर पर बैठ कर आपसी अनुभवों के आधार पर सुलझाया जा सकता है। इससे मिर समुदाय में एक अंतरंगता बनी रहेगी। सम्मेलन में हुए इस अद्वितीय निर्णय ने मिर के समूचे सामुदायिक परिवार को एक मजबूती दी है और मिर सांस्कृतिक विरासत को आगे ले जाने में एक और मददगार स्थिति बनाई है।

2. मिर समुदाय से सम्मेलन में महिलाओं की व्यापक (comprehensive) भागीदारी

मिर समुदाय की महिलाओं ने सम्मेलन पूर्व से लेकर सम्मेलन के दौरान सार्थक हिस्सेदारी बनाई। इस हिस्सेदारी में मुख्य रूप से मिर समुदाय की स्थानीय मिर महिलाओं नेसम्मेलन के मंच के रूप रेखा के समूची संरचना को यथार्थ दृश्य में रूपायित किया जैसे कि मंच पर मिट्टी से अपने हस्त कलाओं को तरह-तरह के आकृतियों के माध्यम से उकेरा। मिर महिलाओं के द्वारा बनाए हस्तकला के इन अभिव्यक्तिओं ने सम्मेलन के इस कार्यक्रम में सामुदायिक रूढ़ियों के सिरहाने से खसक अपने स्थान को तराशने के प्रयास का परिलक्षण देती हैं। ये भी सम्मेलन के पुरुषीया माहौल में एक दूसरे के साथ बढ़-चढ़ करके हिस्सेदारी अर्जित करती है।

मंच पर उकेरे आकृतियों के साथ ही साथ पुराने कपड़ों और रंगीन धागों जैसे वस्तुओं से बनाई गयी दस्तकारी के कलाओं से मंच को सज्जित भी किया। इन हस्तकलाओं चाहे वो मिट्टी की आकृति हो या दस्तकारी कलाये ये इन सामुदायिक महिलाओं की उपस्थिती का मिर समुदाय में एक धोतक भी है। जो मिर महिला समूहों को प्रभावित और उत्साहित करती है और अपनी भागीदारी के लिए तमाम अवसरों में अपनी भूमिका सुनिश्चित करती है।

मिर महिलाओं ने अपनी उपस्थिती के इन अवसरों को सुनिश्चित करने में मंच सज्जा के साथ मंच पर अपनी गायकी को भी इस सम्मेलन में प्रस्तुत किया। मिर महिलाओं की प्रस्तुति इतने वृहद मंच पर सामूहिक रूप से प्रस्तुत करने का यह पहला अनुभव रहा है। जो मिर परंपरा में प्रस्तुतियों की विविधिता में एक इस आयाम को भी जोड़ती है। इन प्रस्तुतियों ने बाबा फरीद रंग मिर सम्मेलन को खास तो बनाया ही है और इसके साथ मिर महिलों को अपने कलात्मक अभिव्यक्ति के अवसर भी बनाए।

3. सम्मेलन के भूगौलीक अस्मिता को पहचान

इस परियोजना के मिर परंपरा के प्रशिक्षण शिविरों में शामिल तीन गाँव 4 के. पी. डी., छत्तरगढ़, 1पी.बी. स्थानीय जन की चर्चाओ में काफी रहा है। क्योंकि यहाँ व्यवस्थित तौर पर मिर प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया है। इनमें सबसे मुख्य रूप से 1पी.बी. गाँव रहा। इस गाँव में मिर सम्मेलन का भलीभांति आयोजन किया गया। इस आयोजन के बाद इस गाँव को मिरगढ़ के नाम से भी पुकारा जाने लगा। इससे यहाँ के मिर कलाकारों को स्थानीय रूप से भूगौलीक पहचान भी मिली है।

सम्मेलन की सार्थकता में और भी कई बातें जोड़ी जा सकती है। जैसे कि इस मिर सम्मेलन से मिर समुदाय के आस-पड़ोस में मिर परंपरा के लिए सम्मानीय स्थिती बनाने कि गुंजाइश मालूम पड़ती है। मिर संगीतिय परंपरा से कैसे सांस्कृतिक पूंजी (cultural capital) तैयार कि जा सकती है का आभास मिलता है और मिर संगीत परंपरा से सामुदायिक अस्मिता का निर्माण किया जा सकता है। इस सम्मेलन से मिर संगीत परंपरा अपने जीवन के विस्तारण की दिशा में आस की सांस लेने लगी है।

मेरे विचारों में सम्मेलन तक का अनुभव

इस परियोजना के दौरान मैं मिर समुदाय से पहली बार ही मिला और इनको पहली बार ही जानने समझने का अवसर इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बैंगलोर के माध्यम से मिला। इस दौरान मिर समुदाय के दो ऐसे गायक और वादकों बस्सु खान और अब्दुल जब्बार से मुलाकात हुई। जो कई उस्तादों से उम्र और फनकारी में अभी तो बहुत पीछे हैं लेकिन इनकी गतिशीलता और मिर समुदाय को आगे लेकर चलने के जज्बे से यह सराबोर दिखाई देते हैं। आगामी योजनाओं के ज़बान और कदम के साथ समन्वय बनाने में पुनः एक और इस तरह की यात्रा का आरंभ कर रहे हैं। जो बहूत ही सकारात्मक ऊर्जा से प्रवाहित हो रही है। ऐसे सदस्यों की संख्या में वृद्धि होना किसी भी जन समुदाय के संगठनात्मक ढांचे को और भी मजबूत एवं उर्वरक बनाता है। मिरों के सामुदायिक वातावरण में जितना अलगाव प्रतीत होता है । उससे कहीं ज़्यादा अपनापन । जो इस समुदाय की एक और खास प्रकृति है। जो यहाँ भिन्नता में एकता को दर्शाती है। जो इस समुदाय की आपसी विविधिता सुनिश्चित भी करती है।

तमाम धार्मिक और जेंडर को लेकर पारंपरिक दकियानूसी को पीछे छोड़ मिर समुदाय की महिलाओं ने अपने हस्तकला और मिर संगीत परंपरा के अभिव्यक्ति को इस सम्मेलन में समुदाय के सामने प्रस्तुत करती हैं। जो इस परियोजना के सार्थक पहलुओं में से एक है। मिर कमेटी का सामुदायिक सांगठानिक ढांचा में रूपांतरित होना। इस कार्यक्रम कि खास उपलब्धि तो रही ही है। यह उपलब्धि एक ऐसी प्रक्रिया है जो मिर समुदाय के आगामी कार्यों में भी मिल का पत्थर साबित होगी का प्रतीत होता है। मिर समुदाय के विस्तारण में मिर समुदाय से ही एक आंतरिक ऊर्जा का प्रवाह अतिआवश्यक है। मुझे लगता है कि इस प्रकार कि आंतरिक ऊर्जा समुदाय को आगे ले चलने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका लेती है।

सामाजिक और सांस्कृतिक न्याय की कड़ी में मिर समुदाय अभी निचले पायदान पर जद्दोजहद कर रहा है। इस समुदाय की स्थिति स्टेट के सांस्कृतिक विविधिता के पोषण के लिए बने तमाम योजनाओं को दूर –दुरान्त तपते रेतीले समुद्र पर खड़े होकर मुह चिढाती है। स्टेट को इस समुदाय के विस्तारण के लिए कुछ परिपक्व योजनाओं का आरंभ करना चाहिए। जो अभी काफी दूर महसूस होता है। अगर स्टेट को इस दिशा में कार्य करना है तो इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स के परियोजनाई मॉडल को एक बार अवश्य अपनाना चाहिए। इस मॉडल के केंद्र में सामुदायिक पारंपरिक संगीतिय अभ्यास है। जो इस समुदाय को अपने पैरों पर स्वयं खड़े होने के लिए उत्साहित और प्रेरित करती है। हुंमकार भरती है कि चलो! एक कदम और आगे फरीदण चल! तुरया-तुरया चल अपने इरादे को निहारते, हौसलों से साँसों को पोषीत करते। चल! एक कदम और आगे।

सम्मेलन से आगे की ओर

मिर परंपरा के भविष्य मार्ग की प्राथमिक रूपरेखा में मुख्य है। मिर समुदाय के उन ग्रामों में भी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन करना जहां के मिर विस्तारिकरण के काफिले में शरीक होना चाहते हैं। मिर समुदाय के विस्तारिकरण के सिलसिले में एक कड़ी बनना चाहते हैं। ऐसे मिर ग्रामों की संख्या लगभग 18 से 20 तक की है। नए ग्रामों में मिर प्रशिक्षण शिविर के लिए सम्मेलन में उपस्थित अन्य मिर आलमों का खास समर्थन रहा भी है। दूसरा भविष्यगत उद्देश्य रहा की इन शिविरों में प्रशिक्षित होने के बाद मिर यात्रा का आरंभ किया जाए ताकि मिर समुदाय के संगीतीय चलन को प्रत्येक ग्राम के स्थानीय भूगौलीक परिवेश तक ले जाया जा सकें। जिससे स्थानीय श्रोताओं और अन्य पड़ोसियों में मिर संगीत की जागरूकता फैले। इससे मिर समुदाय को तमाम अनुष्ठानों-पर्वों –अवसरों में कार्यक्रम की निरन्तरता को ऊर्जा दिया जा सकता है। दूसरा कि मिर समुदाय का एक स्थानीय सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना किया जाए। जो मिर समुदाय के परंपरा एवं समकालीन परिस्थितीयों पर सामूहिक विमर्श का एक सामूहिक सामुदायिक स्थान हो। इस पर सामूहिक निर्णय होने के बाद मिर कमेटी के बस्सु खान (1 पीबी-बीकानेर), अब्दुल जब्बार (पुगल -बीकानेर) एवं इनकी सहायक भूमिका में अंतर जी (रामडा) ने आगामी अगुआई संभाली।

मिरवाला समुदाय के साथ जुड़ाव का सिलसिला : तृतीय चरण

परियोजना : मिर यात्रा

मिर यात्रा का धरण

सन् 2010 की परियोजना बाबा फरीद रंग मिर शिविर एवं बाबा फरीद रंग मिर सम्मेलन के साथ ही साथ मिर समुदाय के संग अलगे चरण की परियोजना का आग़ाज़ भी हो ही चुका था। इस विगत परियोजना के लगभग चार वर्ष के मंथन के बाद और मिर परंपरा के विस्तारण कार्य की योजना के विविध आयामों के विश्लेषण के बाद यह अगला चरण आरंभ किया गया।

सन् 2015 के माह सितम्बर से मिर यात्रा परियोजना का आरंभ होता है। यह परियोजना इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स का मिर समुदाय के साथ अब तक का तीसरा परियोजना है।

इस मिर यात्रा परियोजना में मुख्य रूप से उन मिर ग्रामों में प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाना है। जहां अभी तक मिर प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन नहीं हो पाया है। इस मिर यात्रा के परियोजना से मिर परंपरा के विस्तारण में एक महत्वपूर्ण मजबूती यह आएगी की मिर संगीतिय विस्तारण के लक्ष्यों में मिर समुदाय का जुड़ाव और भी अधिक वृहत होगा। जो मिर समुदाय को स्थानीय मान्यताओं के साथ ही साथ सामुदायिक संबल भी प्रदान करेगी। इस आयोजित परियोजना में मिर समुदाय एक बार और उन शागिर्दों और उस्तादों को प्रशिक्षण में इकठ्ठा करेगा। जो पहले के शिविरों से वंचित रह गए थे। इनके प्रशिक्षणों के दौरान इनकी स्थानीय प्रस्तुतियाँ और स्थानीय सामुदायिक कार्यक्रमों का तिथि पत्रक (कैलेंडर) को भी बनाना निर्धारित किया गया है। यह तिथि पत्रक मिर सामुदाय के पारंपरिक अभ्यास को गतिशील और स्थानीय श्रोताओं के कार्यक्रमों से तारतम्यता स्थापित करने में बहुत ही कारगर साबित होगा। pg. 30

इन लक्ष्यों की दिशा में मिर आलमों का कारवां अपना सिलसिला एक बार नए अंदाज़ में पुनः आरंभ करता है। इस तीसरे चरण की परियोजना को एक सार्थक रूपरेखा निर्मित करने के लिए एक बार को और इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बैंगलोर ने मिर समुदाय के सदस्य मिर कमेटी को आगे बढ़ाने के आस्वासन को स्वीकार करता है। मिर समुदाय के मिर यात्रा के आग़ाज़ से अंजाम-ऐ-सफ़र को मुक्कमल बनाता है।

मिर यात्रा शीर्षक से निश्चित किए गए। मिर समुदाय के पारंपरिक संगीत धरोहर को विस्तार रूप देना और इस परंपरा को संवहनीय दिशा में प्रवाहित करने के लिए इस परियोजना का प्रवाह चार आरंभिक ग्रामों में मिरगढ़, पूगल, रामड़ा और भानिपुरा में शुरू किया गया। और बाद में एक और गाँव रामसर प्रत्यक्ष रूप से जुडा। मिर समुदाय के कृषि कैलेंडर के अनुसार 9 से लगभग 18 माह तक की मिर यात्रा परियोजना के संचालन के लिए इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स ने मिर कमेटी के परामर्श के अनुसार इस परियोजना के सुगमकर्ता के रूप मुझको जोड़ा।

मिर यात्रा के इस लेख में मिर यात्रा परियोजना के चरणों –पर्वों पर एक आलेखचित्र बनाने के लिए इस मिर यात्रा के प्रथम पर्व एवं इस शुरुआती पर्व पर विस्तृत विवरण किया जाएगा। इसके अलावा बाकी के पर्वों की रूपरेखा को संक्षिप्त में इस निबंधकीय आलेख में प्रस्तुत किया जाएगा। ताकि इस यात्रा के साथ पाठक पूर्ण रूप से इसके कोसों का आलेख अनुभव कर सके। इस सम्पूर्ण यात्रा का एक रेखाचित्र बना सके और मिर यात्रा से इस संगीतीय परंपरा के विस्तारण की दिशा में सामूहिक साझी सहमति का निर्माण किया जा सके।

मिर यात्रा में प्रत्यक्ष रूप से जुड़े गाँव

मिर सामुदाय गाँव : मिरगढ़

1 पी.बी. गाँव का नाम मिर सम्मेलन के बाद से स्थानीय मिर समुदाय में इस गाँव को मिरगढ़ के नाम से बोला जाता है। इस गाँव में मिर संगीतिय परंपरा में सरायकी गायन का प्रचलन मुख्य है।
इस यात्रा परियोजना के अनुसार 15 सितम्बर से 25 सितम्बर, 2015 मिरगढ़ में शुरू किया गया। शिविर के शुरुआत में मिर समुदाय के गायन और वादन में रूचि रखने वाले बच्चों के प्रशिक्षण के लिए उस्ताद एवं अन्य वयस्क शागिर्दों ने विशेष ध्यान देना शुरू किया है। इस प्रक्रिया में मिर यात्रा के अंतर्गत होने वाले अन्य व्यस्तताओं और जिम्मेदारियों में भी बच्चों को शामिल करने के लिए एक खुला और भयमुक्त परिवेश का निर्माण किए जाने पर विशेष ज़ोर दिया है।

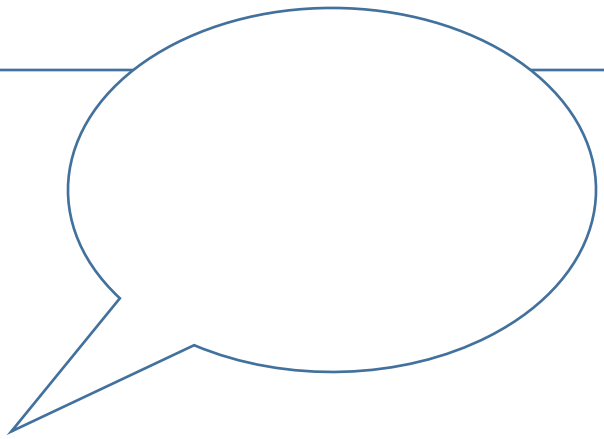

इस शुरुआत से मिर बच्चे विविध प्रकार की जिम्मेदारियों को स्वयं करके अनुभव निर्माण करने का साझा प्रयास कर रहे हैं। जैसे कि मिर यात्रा से जुड़े किसी मीटिंग के मिनट्स लेना, बैठक पूर्व की तैयारियां करना, अपने सम-वर्षीयों को अपने संगीतीय अनुभव साझा करना आदि। मिर यात्रा शिविर के संचालन के लिए समय-समय पर मिर प्रशिक्षण शिविर संबंधी मुद्दों पर बैठकों के आयोजन को निरंतरता दी जा रही है।

इस शिविर में कुल 16 सदस्य भागीदारी कर रहे हैं। शिविर के शिक्षण –प्रशिक्षण और सहायक प्रक्रियाओं में निम्न सदस्य भागीदारी ले रहे हैं:

क्रम	नाम	ज़िम्मेदारी
1.	मिर बस्सु खान	उस्ताद
2.	मिर सत्तार खान	उस्ताद
3.	मिर शरीफ खान	सहायक
4.	मिर मुनीर खान	शागिर्द
5.	मिर फिरोज़ खान	शागिर्द
6.	मिर मुश्ताक़ अली	शागिर्द
7.	मिर अब्दुल रहमान	शागिर्द
8.	मिर हाशिम खान	शागिर्द
9.	मिर साजिद खान	शागिर्द
10.	मिर रमजान खान	शागिर्द
11.	मिर शाबू खान	शागिर्द
12.	मिर अमीन खान	सहायक
13.	मिर कालु खान	शागिर्द
14.	मिर कुर्बान खान	शागिर्द
15.	मिर रोशन खान	सहायक
16.	रशीदा	सहायक

मिर समुदाय गाँव : पुगल

पुगल में मिर यात्रा के पहले चरण की शुरुआती यात्रा के शिविर को आरंभ किया गया। मिर समुदाय को समकालीन सामाजिक स्थितियों के अनुसार समुदाय को संवहनीय बनाने के लिए विविध मिर परियोजनाओं से विगत में भी इस गाँव के मिर समुदाय के सदस्यों को अधिकत्तम जोड़ा जाता रहा है। पुगल में इस बार के इस मिर यात्रा परियोजना को सुचारु रूप से चलाने के लिए मिरगढ़ में हुए पूर्व बैठको के चर्चा –परिचर्चा की प्रक्रियाओं में यहाँ के संभागियों को हिस्सा लेने के लिए अवसर बनाया गया है। पुगल शिविर की मिर परंपरा की अपनी खासियत तबला वादन एवं अल्गोजा वादन है।

पुगल में मिर यात्रा के शिविर में कुल पाँच संभागी निम्न रूप से भागीदारी ले रहे हैं। इन सदस्यों की संख्या और नाम निम्न प्रकार से हैं:

क्रम	नाम	जिम्मेदारियाँ
1.	अब्दुल जब्बार	उस्ताद
2.	साजिद अली	शागिर्द
3.	माजी खान	शागिर्द
4.	मज़ीद अली	शागिर्द
5.	सहिदन	सहायक

मिर सामुदाय गाँव : रामड़ा

मिरगढ़ और पुगल के साथ ही साथ रामड़ा में शिविर की शुरुआत मिर सामुदायिक कमेटी की सहायता से शुरू किया गया। रामड़ा का प्रशिक्षण शिविर विगत दोनों ग्रामों से कुछ अलग तरह का शिविर प्रतीत हुआ है। इस शिविर में मिर परंपरा के साथ ही साथ मिरा और कबीर परम्पराओं को गाने वाले समुदाय के सदस्य भी स्वैच्छिक रूप से यहाँ भागीदारी कर रहे हैं। यह प्रशिक्षण शैली गायन एवं वादन के उपस्थित स्थानीय विविधिता को दर्शाती है।

क्रम	नाम	जिम्मेदारियाँ
1.	नज़रू खान	उस्ताद
2.	पल्लू खान	उस्ताद
3.	मंजी खान	शागिर्द
4.	शौकत खान	शागिर्द
5.	शुबान खान	शागिर्द
6.	मुख्तियार खान	शागिर्द
7.	मुनीर खान	शागिर्द
8.	आज़म खान	शागिर्द
9.	बरक़त खान	शागिर्द
10.	वारिसान	सहायक
11.	इक़बाल खान	उस्ताद

मिर सामुदाय गाँव : भानीपुरा

भानीपुरा में मिर यात्रा शिविर की निरंतरता बनी रही है। इस शिविर में कबीर और अन्य भजन का अभ्यास गायकी में किया जा रहा है एवं वादन में हारमोनियम, ढोलक व तबला और अन्य परकशन शामिल है। इस शिविर में 12 सदस्य अपनी शिविर प्रक्रिया में शामिल हैं और चरण वार यह शिविर अपनी निरंतरता बनाए हुए है।

भानीपुरा शिविर के निम्न सदस्य हैं:

क्रम	नाम	विवरण
1.	अंतर खान	उस्ताद
2.	ममहड़ खान	उस्ताद
3.	इक़बाल खान	शिविर सहायक
4.	सादिक़ खान	ढोलक शागिर्द
5.	सदीक़ खान	गान शागिर्द
6.	खादम खान	गान शागिर्द
7.	मांजि खान	ढोलक शागिर्द
8.	मामाल खान	गायकी एवं वादक उस्ताद
9.	पप्पू खान	सलाहकार
10.	मुश्ताक़ खान	हारमोनियम शागिर्द
11.	इक़बाल खान	ढोलक वादक
12.	रसोई सहायक	रसोई सहायक

मिर सामुदाय गाँव : रामसर

यहाँ पर शिविर के प्रस्ताव को मिर कमेटी के माध्यम से इस गाँव के शिविर का सफल आयोजन हो पाया है।रामसर गाँव में मिर परिवारों की अन्य समुदाय की अपेक्षा एक छोटी संख्या है। यह गाँव मिर कार्यक्रमों में अभी तक सबसे एकांत और छुटा हुआ रहा था। लेकिन इस बार की इस यात्रा में इस गाँव के जुडने से यहाँ के मिर परिवार में संगीत परंपरा को लेकर एक नयी और मजबूत ऊर्जा का प्रवाह हुआ है।

मिर परंपरा के मिर गायक और वादक रामसर में सरायकी शैली में अपनी निपुड़ता रखते हैं। रामसर गाँव के शिविर के निम्न सदस्य इस मिर यात्रा में शामिल है:

क्रम	नाम	विवरण
1.	सत्तार खान	उस्ताद
2.	जमाल खान	उस्ताद
3.	मनफूल खान	उस्ताद
4.	अकबर खान	शागिर्द
5.	सद्दाम खान	शागिर्द
6.	मुमताज़ खान	शागिर्द
7.	प्रेम सिंह भाटी	श्रोता स्वैच्छिक भागीदारी

शिविर में शामिल ग्रामों के साथ मिर कमेटी ने कई गाँव को इस मिर यात्रा परियोजना से जुडने के लिए उत्साहित गाँव के सदस्यों के साथ इनसे नित बैठकों का आयोजन भी किया जाता रहा है। इसी क्रम में एक और खास गाँव गड़ियाला के मिर परंपरा से मुलाकात करने का मौका मिला। लेकिन यह गाँव इस मिर यात्रा में अपनी सामुदायिक कारणों से जुड़ नहीं पाये। इस गाँव के साथ व्यवस्थित बैठक का अवसर मिला इसलिए इस गाँव की रूपरेखा भी इस निबंध में साझा कर रहा हूँ।

मिर यात्रा में अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा गाँव

मिर सामुदाय गाँव: गड़ियाला

हम सब गड़ियाला के मिर गायकों और वादको से काफी लंबे समय से मिलना चाहते थे। यह बैठक 2015 के एक मई को आज मजदूर दिवस के दिन संभव हो पाया और गड़ियाला गाँव के मिर आलमों से मुलाक़ात करने की यह एक बहुत ही अनूठा दिन और अनुभव रहा। यहाँ बैठक और बातचित से पूर्व उपस्थित मिर गायकों और वादकों ने आपस में मिलकर माण्ड के गायनों की छटा का माहौल महका दिया । इस संगीतमय चरण के उपरांत मिर यात्रा के संबंध में और इसमें शामिल होने के प्रस्ताव को रखते हुए चर्चा को आगे बढ़ाया गया। एवं मिर परंपरा के विस्तार और इसकी स्वायत्ता पर विस्तार से विमर्श किया गया। इस चर्चा को मुख्य रूप से अब्दुल जब्बार ने कड़ी दर कड़ी आगे बढ़ाया और इस परियोजना से मिर समुदाय की संभावना पर अपने संदर्भित अनुभवों को साझा किया। गड़ियाला बैठक में उपस्थित उस्ताद, शागिर्द, स्थानीय श्रोता, मिर केटी सदस्य, शिविर सहायक एवं सुगमकर्ता

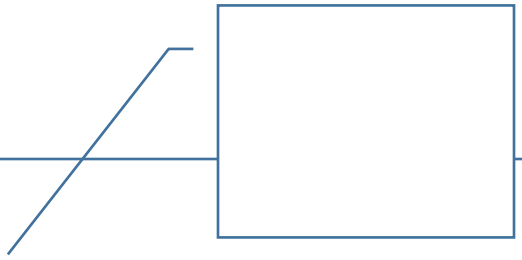

क्रम	नाम	विवरण
1.	रहीम खान	गायक उस्ताद
2.	जमे खान	हारमोनियम उस्ताद
3.	कमाल खान	गायक उस्ताद
4.	अब्दुल मजीद	गायक शागिर्द
5.	अलादीन खान	गायक शागिर्द
6.	जलाल खान	गायक शागिर्द
7.	छोटू खान	गायक शागिर्द
8.	शौकत खान	रामड़ा शिविर सदस्य
9.	अरशद खान	गायक उस्ताद
10.	कोफू खान	गायक उस्ताद
11.	जमाल खान	गायक उस्ताद
12.	रमजान खान	गायक शागिर्द
13.	रज़्ज़ाक़ खान	गायक शागिर्द
14.	मुबारक़ खान	गायक शागिर्द
15.	फंजू खान	चारण कला
16.	गामु खान	गायक शागिर्द
17.	जाकिर खान	गायक शागिर्द
18.	जबात खान	गायक शागिर्द
19.	समू खान	गायक शागिर्द
20.	हबीब खान	गायक शागिर्द
21.	हामी खान	गायक शागिर्द
22.	पुने खान	उस्ताद
23.	मुमास खान	गायक शागिर्द
24.	शौकत खान	गायक शागिर्द
25.	रसूल खान	उस्ताद
26.	मूसला खान	गायक शागिर्द
27.	मनु खान	वादक शागिर्द
28.	डिलू खान	वादक शागिर्द
29.	अश्कर खान	गायक शागिर्द
30.	हसण खान	वादक शागिर्द
32.	लियाक़त खान	उस्ताद
32.	आयम खान	उस्ताद
33.	मापु खान	गायक शागिर्द
34.	अमीम खान	वादक शागिर्द
35.	मिर समाद खान	वादक उस्ताद
36.	अब्दुल जब्बार	मिर कमेटी सदस्य
37.	ममाल खान	भानीपुरा शिविर सदस्य
38.	पलू खान	रामड़ा शिविर सदस्य
29.	अंतर खान	मिर कमेटी सदस्य
40.	बस्सु खान	मिर कमेटी सदस्य
41.	राजकुमार रजक	मिर यात्रा सुगमकर्ता

मिर यात्रा की सामुदायिक मुख्य रणनीतियाँ

मिर यात्रा में प्रतायक्षा रूप से जुड़े इन गाँव के साथ नियमित बैठकों का प्रत्येक शिविर में आयोजन किया जाता रहा है। इससे शिविर के तात्कालिक चुनौतियों को समझना और इन चुनौतियों पर सामूहिक निर्णय लेना। इससे मिर यात्रा के तमाम सदस्यों में एक एकजुटता और अपने काम की आलोचना-समालोचन कर संवाद से मुश्किलों का हल निकालने के अभ्यासों को बढ़ाया जाता रहा है। इससे नव मिर कलाकारों और उस्तादों के मध्य उम्र दूरियों के स्थान पर आपसी संवाद का प्रचलन की खुली हुई गुंजाइश बनने लगी है। यह तमाम बैठक असला में इन मिर प्रशिक्षण शिविर यात्राओं का एक अहम पहलू है। जो इस पूरे परियोजना को बहाल करता है। इन तमाम बैठकों में से मिर यात्रा के बैठकों की प्रकृति तथा रूपरेखा जो जानने व समझने के लिए यहा कुछ बैठकों को तफ़िसल रूप में साझा कर रहा हूँ। मिर समुदाय के साथ हुए इन बैठकों से हम अंदाज़ लगा सकते हैं कि मिर सामुदायिक सदस्य इन बैठकों में कितनी गंभीर रूप से मंथन प्रक्रिया से संबन्धित रहे हैं। जो इस परंपरा को आगे ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका बनाती है। कुछ मुख्य बैठकों से इस प्रकर का सदृश्य सामने उभरता है जो निम्न रूप से यहा साझा कर रहे हैं:

मिर सामुदायिक बैठक : एक

मिर यात्रा के इस चरण में एक दिवसीय बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में मिर सामुदायिक कमेटी, स्थानीय श्रोता आदि उपस्थित रहे हैं। बैठक में मुख्य रूप से शिविर में शागिर्दों के जुड़ाव की प्रक्रिया क्या होगी पर बात की गयी कि शिविर से जुड़े प्रत्येक शागिर्द के साथ परियोजना के तहत कुल 50-50 दिन का कार्य किया जाएगा। लगभग तय किए गए आठ गाँव के अधिकत्तम शागिर्दों तक इस प्रक्रिया से पहुँच बनाई जा सकती है। इस पर बैठक में उपस्थित सदस्यों ने मिर सामुदायिक कमेटी के इस निर्णय को अपनी स्वीकृति दी।

इस प्रकार के निर्धारण के लिए मिर सामुदायिक कमेटी और सदस्य इस निर्णय के समान भागीदार होंगे। क्योंकि मिर यात्रा एक सामुदायिक गतिविधि और सामुदायिक ज़िम्मेदारी के समान सामने उभर कर आई है। लगभग आठों गाँव में शिविर के चरण अलग –अलग समय में चलेंगे। गाँव में चलने वाले इन चरणों में प्रत्येक गाँव के संभागियों में से एक –एक सदस्य को वहाँ के स्थानीय शिविर के प्रबंधन के लिए मिर कमेटी चयनित करेगी को तय किया गया। बैठक के इन मुद्दों में मिर सामुदायिक कमेटी और श्रोताओं के साथ शिविर के दौरान वार्षिक तिथिपत्रक के निर्माण का प्रस्ताव रखा गया है। इस मिर यात्रा में जुड़े उस्तादों, शागिर्दों और सहायकों के मेहनताने को मिर सामुदायिक कमेटी ने तय किया । यह तिथिपत्रक मिर समुदाय से जुड़े स्थानीय उत्सवों, मिर समुदाय के श्रोताओं के किन्ही अवसरों एवं स्थानीय उर्स मुबारकों को मनाए जाने वाले तिथियों को एक जगह संग्रहीत करना एवं इसका मिर समुदाय में प्रसार करना। इस वार्षिक तिथिपत्रक को बनाने के साथ ही साथ मिर समुदाय के युवा व इच्छुक सदस्य मिर यात्रा और मिर समुदाय से जुड़े तथ्यात्मक व विवरणात्मक शोध कर सकते हैं। इसका मिर कमेटी के समक्ष प्रस्ताव रखा गया। इन प्रस्तावों में मिर कमेटी के सदस्य व उपस्थित सदस्यों ने इस पर अपनी रजामंदी प्रदान की।

मिर सामुदायिक बैठक में उपस्थित मिर सामुदायिक सदस्य

क्रम	नाम	गाँव
1.	शरीफ खान	1पी बी (मिरगढ़)
2.	सत्तार खान	1पी बी (मिरगढ़)
3.	माझी	गड़ियाला
4.	रौशन जी	1पी बी (मिरगढ़)
5.	फिरोज़	कंकराला
6.	मुनीर	रानेवाला
7.	कालू खान	1पी बी (मिरगढ़)
8.	शौकत	रामड़ा
9.	शाज़िद	पुगल
10.	मजीद	पुगल
11.	सद्दाम	1पी बी (मिरगढ़)
12.	माज़ी अब्दुल	1पी बी (मिरगढ़)
13.	सत्तार	1पी बी (मिरगढ़)
14.	रौशन खान	रामड़ा
15.	अब्दुल	1पी बी (मिरगढ़)
16.	रियाज़ (श्रोता)	1पी बी (मिरगढ़)
17.	राजकुमार	इलाहाबाद

मिर सामुदायिक बैठक : दो

मिरगढ़ में हुए पहले बैठक के क्रम में आज की दूसरी बैठक का आयोजन किया जा रहा है। मिरगढ़ में स्थानीय मिर सामुदायिक कमेटी के सदस्यों के साथ लघु चर्चा का आयोजन किया गया। चर्चा के शुरू होने से पहले मिर यात्रा के शिविर से सत्तार खान ने और शिवर में हिस्सेदारी ले रहे बच्चों ने एक साथ मिल कर कई कौव्वालियों से इस बैठक का स्वागत किया। इस बैठक में बच्चों के जुड़ाव और पहले शागिर्द रह चुके सत्तार में मिर परंपरा को लेकर काफी संजीदगी का आभास मिल रहा था। क्योंकि इससे पहले कभी ऐसा दृश्य देखने में नहीं आया कि सत्तार खान कौव्वाली की कभी अगुआई करें। यह अभी तक के मिर यात्रा के चरणों में काफी सराहनीय स्थिति बनती दिखती है।

मिर समुदाय के गायक और वादक बच्चों में स्वयं कि अगुआई करने के लिए एक भयमुक्त वातावरण के शुरुआत कि झलकी तो प्रतीत होती ही हैं। इसके संग मिर वयस्क और बच्चों के बीच की संवाद की दूरियाँ भी खत्म होती जान पड़ती है। खैर आज के बैठक में लगभग 8 वयस्क , 6 बच्चे और सुमना एवं मैंने हिस्सेदारी ली है। आज के बैठक का मुद्दा कुछ इस प्रकार से रहा है जैसे:

- मिर यात्रा में अभी तक हुए अनुभवों को साझा करना
- मिर यात्रा के गाँव के क्रम बनाने की प्रक्रिया क्या हो सकती
- वार्षिक स्थानीय तिथिपत्रक
- मिर समुदाय के विवरणात्मक एवं तथ्यात्मक शोध के लिए हम कौन –कौन से बिन्दु ले सकते हैं।

मिर यात्रा में अभी तक हो रहे अनुभवों पर अधिकत्तम रूप से मिर सामुदायिक कमेटी के सदस्य बस्सु एवं अब्दुल जब्बार ने ही रखी। इनका मानना है की इस बार के मिर यात्रा अनुभवों में सबसे मुख्य है बच्चों का जुड़ाव और इनका शिविर में लगातार स्वयं प्रशिक्षण लेते रहना। दूसरे बिन्दु पर बैठक में उपस्थित अन्य सदस्यों ने भी अपने मत रखे हैं कि मिर समुदाय में मिर परंपरा के साथ ही साथ कृषि की व्यस्तताएँ होती रहती हैं। इस इस दिशा में गाँव के क्रम को स्थानीय लोगों की व्यस्तताओं के अनुसार हमें गाँव के क्रम का चयन करना चाहिए अथवा इसको आधार बना कर हमें क्रम को निर्धारित करना चाहिए। इस चर्चा से कमेटी के सदस्य बस्सु और शरीफ जी ने बात रखी की इसकी ज़्यादा खास ज़रूरत नहीं है। प्रत्येक उर्स को हम कैसे सूचित करेंगे जैसी किन्ही कठिनाइयों को रखा इस पर उपस्थित सदस्यों ने दो उपाय सुझाए कि जैसे सम्मेलन के दौरान उर्स समितियों से बात किया गया था और वो अपने प्रांगण में मिर कार्यक्रम करने के लिए राज़ी हो गए थे। इस तरह कमेटी को उर्स समितियों के साथ बातचीत करने की निरंतरता को बढायी जानी चाहिए। जो इस मिर यात्रा कार्यक्रम में भी ऊर्जा दे सकता है।

इसके साथ वार्षिक कैलेण्डर को बनाने के पीछे की अवधारणा को सुमना ने विस्तृत रूप से साझा किया कि मिर समुदाय के पास अगर यह कैलेण्डर बना रहे तो इससे मिर समुदाय को अपने कार्यक्रमों के विस्तार को बढ़ाने का एक स्थानीय अवसर बनता है। यह कैलेण्डर मिर समुदाय अथवा मिर परंपरा से जुड़े सभी संदर्भित संस्थानो एवं व्यक्तियों के पास इसको वितरित कर इसको अपने प्रचार –प्रसार के लिए उपयोग में लिया जा सकता है। मिरगढ़ निवासी शरीफ जी ने और उपस्थित सदस्यों ने भी इसकी ज़रूरत को क्रियान्वित करने के लिए सहमति जताई। और यह कौन -कौन कर सकता हैं के सुझाव भी रखे। इस कैलेण्डर की संरचना के लिए मैंने बस्सु से चर्चा किया कि क्यों न इस कैलेण्डर की संरचना (design) मिर महिलाओं के हस्तकला के द्वारा किया जाए। बस्सु के हाँ कहने पर इस दिशा में मिर महिलाओं ने भी सोचना समझन शुरू किया और अंततः एक निर्णय बन पाया।

तीसरे बिन्दु में मिर समुदाय के विवरणात्मक एवं तथ्यात्मक शोध के लिए हम कौन –कौन से बिन्दु ले सकते हैं। इस पर सुमना एवं उपस्थित सदस्यों ने कुछ बिन्दुओं को प्रकाशित किया जैसे कि मिर समुदाय में लगभग कितने लोग गाते है? तो मिर परंपरा में उनकी किस पर मास्टरी है, कितनी मिर महिलाएं गाती हैं? कौन –कौन से लोग कौन –कौन से वाद्य यंत्र बजाते हैं? आदि। इन विमर्शों के साथ आज के बैठक का समापन बस्सु, अब्दुल जब्बार और सुमना के घट्टम के जुगलबंदी के साथ हुआ।

मिर सामुदाय : रामड़ा शिविर के दौरान पहली बैठक

रामड़ा में यह मिर यात्रा परियोजना के दौरान पहली बैठक है। इस बैठक में मिर यात्रा शिविर के संभागियों के साथ ही साथ इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स की सुमना भी उपस्थित रही हैं। इस बैठक में निम्न मुद्दे सामूहिक रूप से चर्चा किए गए जो इस प्रकर से हैं।

- ❖ सुमना के द्वारा मिर यात्रा परियोजना का अनुस्थापन
- ❖ मिर समुदाय कमेटी सदस्य अब्दुल जब्बार के द्वारा मिर यात्रा के उद्देश्यों को साझा किया गया
- ❖ परियोजना के सफल होने के आधार हम किन बिन्दुओं को मानेंगे
- ❖ वार्षिक तिथिपत्रक की निर्माण प्रक्रिया क्या होगी
- ❖ मिर समुदाय में शोध के लिए हम कैसे प्रक्रियाओं को अपनाएँगे
- ❖ मिर महिलाओं की भी भागीदारी इस मिर यात्रा में हो सकती है पर सुमना ने अपने विचार रखे
- ❖ संभागियों को अगर कोई मुद्दा जोड़ना है तो जोड़ भी सकते हैं

सुमना के द्वारा मिर यात्रा परियोजना का अनुस्थापन

(सुमना इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स बैंगलोर की प्रतिनिधि हैं। जो मिर परियोजना के आरंभिक चरणों से ही जुड़ी हुई हैं।)

सुमना ने मिर यात्रा के अभी तक की तैयारियों को लेकर एवं मिर यात्रा परियोजना को संक्षिप्त रूप में साझा किया। इस पर उपस्थित सदस्यों के परियोजना से जुड़ी कोई जिज्ञासा सामने अभी नहीं आई है। मिर समुदाय के साथ ही साथ स्थानीय मीरापंथी एवं कबीरपंथी गायक और वादक भी उपस्थित रहे है। परियोजना को साझा के दौरान रामड़ा के पल्लू खान जी का ज़रूर एक जिज्ञासा रही जो परियोजना से जुड़ती है। पल्लू खान जी की जिज्ञासा यूं रही की मिर यात्रा कितने महीने चलेगी और इसमें और भी लोगों को खास कर यहाँ के अन्य स्थानीय लोगों को कैसे जोड़ सकते हैं। इस पर कमेटी सदस्य अब्दुल जब्बार ने प्रतिउत्तर में जवाब रखते हुए कहा कि यह कार्यक्रम कृषि कैलेंडर को ध्यान में रख कर आठ से नौ महीने तक का है। पर इस कार्यक्रम से हमें अपने अपनी बुनियाद मज़बूत करनी है ताकि हम और भी ज़्यादा काम कर सकें और स्टेज पर व्यवस्थित रूप से गायन –वादन कर सकें। और रही इस शिविर से जुडने कि बात तो यह है कि शिविर यहाँ चल रहा है। इसमें सभी इच्छुक गायन और वादन वाले गाँव के पड़ोसी भी यहाँ आकर बैठ सकते हैं। हम उन्हे अपनी प्रतिभा हमें सीखा सकते हैं और हम उनकी प्रतिभा सीख सकते हैं।

मिर समुदाय कमेटी सदस्य के द्वारा मिर यात्रा के उद्देश्यों को पुनः साझा किया गया

मिर यात्रा के उद्देश्यों को सुमना ने साझा करना शुरू किया। जिसमें अब्दुल जब्बार ने उद्देश्यों को जोड़ते हुए अपनी स्थानीय बोली में साझा किया। मिर यात्रा का कार्यक्रम हमें हमारे परंपरा के साथ खड़े होने में सहायता करेगी। इससे हम व्यवस्थित और अलग –अलग प्रतिभावों के साथ स्टेज पर कार्यक्रम देने के लिए तैयार हो पाएंगे। मिर समुदाय में कार्यहीन घूमने –फिरने वालों को एक मौका बी मिलेगा लेकिन इनमें सीखने कि इच्छा होना ज़रूरी है। इस शिविर से कुछ नए बच्चों में भी इस परियोजना में जुड़ने की इच्छा बनेगी और वो भी हमारे साथ कार्य करने के लिए उत्सुक होंगे।

पल्लू खान ने इस कार्यक्रमों के बढ़ोत्तरी को लेकर अपने संवाद रखे की यह कार्यक्रम हमारे हौसला अफ़जायी के लिए बहुत बढ़िया है। इससे मिर आलमों को अपने परंपरा को आगे बढ़ाने और सब के सामने लाने का अच्छा अवसर है।

परियोजना के सफल होने के आधार हम किन बिन्दुओं को मानेंगे

मिर यात्रा को सफल बनाने की तागिद से यह संवाद मैंने शुरू किया की हम कैसे मानेंगे कि यह यात्रा सफल हो रही है। पर बस्सु ने और आली खान जी ने अपने मत रखे की जब हमारे साथ हमारे शागिर्द मंच पर गाने के लिए आत्मविश्वास अर्जित करने लगेंगे, हमारे इस यात्रा से हमें हमारे गाँव और आस –पास के लोगों को हमारे बारे में और भी पता चलेगा, और तभी वो हमारे कला को सम्मान करेंगे और हमें अपने कार्यक्रमों में आमंत्रण देंगे, मिर कार्यक्रम कराएंगे। इस प्रकार के कुछ बिन्दु हैं जिसके माध्यम से हम जान सकते हैं। मैंने इस संवाद में पुनः अपनी बात रखते हुए कहा कि यह बिन्दु तो हैं ही और भी कौन से बिन्दु हो सकते हैं पर उदाहरण रखा की हमें इस मिर यात्रा से मिर समुदाय के कार्यक्रमों कि निरंतरता कैसे बनेगी और कैसे यह यह कार्यक्रम लगातार होते रहेंगे। इसकी सामूहिक योजना भी हमें इस यात्रा से बना लेनी चाहिए।

वार्षिक तिथिपत्रक की निर्माण प्रक्रिया क्या होगी

सुमना ने वार्षिक तिथिपत्रक की हमारी अवधारणा से इस बैठक को पुनः अवगत करवाया एवं यह कैसे मिर समुदाय के लिए लाभान्वित हो सकती हैं पर समूहिक चर्चा कर यह निर्णय लिया गया। इसको एक पत्र के रूप में अपने स्थानीय लिखने –बोलने –चित्रकारी (वर्ली) की शैली में इसको बनाया जा सकता हैं। बनाने के बाद मिर समुदाय में इसको प्रसारित किया जा सकता है। जिससे हम सभी को स्थानीय उत्सवों, उर्सों की निर्धारित और संभावित तिथि के बारे में पता रहेगा। इस तिथि पत्र के अनुसार हम अपने –अपने इलाक़े या गाँव के आस –पास मिर कार्यक्रम के लिए संपर्क कर कार्यक्रमों की निरंतरता को बनाई जा सकती है।

मिर समुदाय शोध के लिए हम कैसे प्रक्रियाओं को अपनाएँगे

अब्दुल जब्बार ने अपने विचार रखे जो मिरगढ़ में इससे पहले की जा चुकी थी। इनके के अनुसार की हमारे बच्चे जो स्कूलों में पढ़ते हैं। इनको इनमें मुख्य रूप से जोड़ा जा सकता है। यह बच्चे अपने-अपने गाँव में बुजुर्गों से या उस्तादों और शागिर्दों से और इनके परिवार से इंटरव्यू कर सकते हैं। गाँव के स्थानीय वाचिक इतिहास के बारे में, परिवार के सदस्यों के बारे में लघु शोध कर सकते है और इस शोध में आई बातें शिविर में वो एक –दुसरे को साझा भी कर सकते हैं। जिससे हमारी सबकी पुरानी और नयी बातों एवं घटनाओं को सभी को पता चल सकता है। मिर समुदाय के बारे में इससे हमारे बच्चे और भी अधिक जानेगे समझेंगे। भविष्य में ये शोधार्थी बच्चे मिर समुदाय की तरफ से लोगो बता सकते हैं।

मिर यात्रा में मिर महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने की कवायद

सुमना ने इस मिर यात्रा से इच्छुक महिलाओं और बच्चियों को जोड़ने का प्रस्ताव भी रखा। इससे मिर आलमों में सुगबुगाहट सी हुई। इस पर नज़रू खान और अब्दुल जब्बार ने अपनी प्रतिक्रिया जताई की ज़रूर हम इस पर भी ध्यान देंगे लेकिन अभी तक ऐसी कोई योजना या बात भी हमने सोची नहीं है पर इस पर हम बात करेंगे की महिलाएं इस परियोजना से प्रत्यक्ष रूप से कैसे जुड़े। सुमना ने इस पर बात रखी की सम्मेलन में महिलाओं ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अपनी भागीदारी ली थी। इसी तरह हम देख सकते हैं और हमें सोचना चाहिए की हम कैसे इनको जोड़ सकते हैं।

मिर यात्रा के कोस (Miles)

मिर यात्रा का प्रथम पर्व

मिर सामुदायिक कमेटी ने मिर यात्रा के लिए अनुमानित आठ गाँव का चयन करने की योजना बना रही है। इन गाँव को मिर यात्रा में शामिल करने के लिए कुछ बिन्दुओं को आधार बनाया गया। जैसे की गाँव में मिर आलमों का अधिकत्तम बसोबास, मिर परंपरा में रूचि रखना और मिर परंपरा सह जीवनयापन के अवसरों से संदर्भित समुदाय को संवहनीय बनाना आदि प्रकार के समकालीन मुद्दे आधार बनाए गए हैं। गाँव के चयन के साथ ही साथ मिर सामुदायिक कमेटी ने सामूहिक तौर पर इन गाँव में होने वाले मिर यात्रा के चरणों को सुव्यवस्थित करने की दिशा में कृषि व्यस्तताओं को ध्यान में रख कर गाँव के प्रशिक्षण शिविर क्रम को वहाँ के मिर गायको और वादकों के साथ मिलकर निर्धारित किया है।

गाँव के क्रमिक निर्धारण के पहले चरण में मिरगढ़ (1 पी.बी.), पुगल, रामड़ा और भानिपुरा के शागिर्दों को वहाँ के स्थानीय उस्तादों द्वारा मिर परंपरा के अनुसार प्रशिक्षण से जोड़ा गया। इस प्रशिक्षण का सम्पूर्ण प्रबंधन स्थानीय संभागियों और मिर सामुदायिक कमेटी के तत्वावधानिक प्रयासों से हुआ।

सितम्बर- 2015 से मार्च -2016 के दो त्रैमासिक चरण के मध्य में मिर सामुदायिक कमेटी और मिर यात्रा परियोजना के प्रतिपालक एवं इंडिया फ़ाउंडेशन फॉर दि आर्ट्स के सदस्य के साथ बैठकों को आयोजित किया गया है। इन बैठकों में क्रियान्वित हो रहे परियोजना के क्रियान्वयन में आ रही चुनौतियों, उपलब्धियों से एक दूसरे को रूबरू करवाना एवं आगामी चरणो के लिए सुझावों को साझा करना मुख्य एजेंडा रहे हैं।

इन चरणों और सम्पूर्ण मिर यात्रा की अगुआई के लिए मिर समुदाय में से मिर सामुदायिक कमेटी की भूमिका में निम्न सदस्य शामिल रहे हैं:

क्रम	नाम	गाँव
1.	अब्दुल जब्बार	पुगल
2.	मिर बस्सु खान	मिरगढ़
3.	शौक़त अली	रामड़ा
4.	अन्तर खान	रामडा
5.	शरीफ खान	मिरगढ़
6.	साजिद खान	पुगल
7.	अब्दुल रहमान	मिरगढ़

इस बैठक की शैली काफी मिर संगीतिया अंदाज़ में बयां हुई । क्योकि बैठक की शुरुआत में काफी देर तक अगल-अलग मिर आलम और मीरा एवं कबीर पंथी गायको वादकों ने अपने संगीत से शुरू की और यहाँ भी सुमना और बस्सु और अब्दुल जब्बार के साथ घट्टम के द्वारा जुगालबंदी भी की गयी। यह अपने आप में एक प्रेरित करने वाली स्थिति रही की संगीत और महिलाओं का ऐतिहासिक संबंध अलग प्रकार से दिखता है। कई बार पुरुषीया प्रभाव इतना होता है कि महिला संगीत अस्मिता पर घाती प्रभाव भी पड़ता है। सुमना के इस संगीत प्रस्तुति से मिर आलमों में भी कई बार सुगबुगाहट होती रही है की अब वक़्त आ गया है। जब मिर महिलाएं भी अपनी गायकी को अपने फन को सामूहिक रूप से बड़े स्तर पर साझा करें प्रस्तुति करें। यह मिर परंपरा के विस्तारण में एक गंभीर मुद्दा है। इस पर मिर आलमों में एक खासा जागरूकता उभर रही है। इस संदर्भ में भानिपुरा में एक आसार दिख रहा है। जहां एक मिर महिला गायक मिर प्रशिक्षण में माण्ड गायन कला की प्रस्तुति समय-समय पर करती रही हैं।

इस मिर संगीत प्रस्तुति और चर्चा का सिलसिला एक–दो बिन्दुओं की बातचित के होने के बाद पुनः शुरू हो जाता यह क्रम पुरे बैठक में जारी रहा। यात्रा के दौरान भूगौलीक चुनौतियाँ तो कुछ खास रहीं नहीं पर कार्य प्रक्रियाओं की ज़रूर कुछ चुनौतियाँ सामने निकल कर आ रही हैं। इन चुनौतियों को बहुत ही सतर्कता से वर्गीकृत कर रहा हूँ ताकि मेरे अपने पूर्वाग्रहों से यह प्रभावित ना हों पर फिर भी अगर यह प्रतीत होता है। तो हम खुले मंच पर इस पर बात भी कर सकते हैं। यह चुनौतियाँ निम्न प्रकार से हैं।

- मिर यात्रा शिविरों में मिर सामुदायिक कमेटी के द्वारा निरंतर ना मिल पाना : मिर सामुदायिक कमेटी का मिर यात्रा शिविरों में प्रतिदिन का जायज़ा ना हो पाना
- मिर यात्रा शिविरों में एक व्यवस्थित स्टडि के माध्यम से शिविर का एक करीकुलम या अभ्यास के मॉड्यूल का आइडिया लगाना की कौन क्या, कब और कैसे अपने शागिर्दों को शिक्षण –प्रशिक्षण से जोड़ पा रहे हैं का अभाव प्रतीत होता है।
- मिरगढ़ के शिविर के सदस्यों में बच्चों की टोली बनने की संभावना अधिक है पर इनकी व्यवस्थित टोली पर अभी कोई निर्णय नहीं लिया जा सका है। इनकी टोली में बच्चों की क्या-क्या जिम्मेदारियाँ होंगी। यह मिरगढ़ से शुरू होकर बाकी शिविरों के लिए एक उदाहरण बन सकता है।
- पुगल शिविर में और भी अधिक संख्या का ना होना एवं शिविर में कम से कम एक उस्ताद का होना आवश्यक है अब्दुल के अनुपस्थिति में ताकि शिविर का कार्य व निरंतरता बाधित ना हो सके, इस पर विचार किया जा सकता है।
- रामड़ा शिविर में अभी भी वहाँ के स्थानीय सदस्य का शिविर प्रबंधन से ना जुड़ पाना, मिर सामुदायिक कमेटी का इस पर अभी ध्यान ना जाना।

मिर यात्रा के इस अंश में अभी तक के बैठकों के दौरान चल रहे शिविरों में लगभग 33 संभागियों की बहुत ऊर्जात्मक भागीदारी बनी रही है। यह मिर यात्रा की अपनी विशिष्टताओं में एक है। इस समुदाय के विभिन्न चरण में भागीदारी लेने से कुछ उपब्धियाँ और सीख सामने प्रकाशित हुए हैं।

इस पर्व की यात्रा में निष्पत्ति

मिर समुदाय के गायन और वादन में रूचि लेने वाले बच्चों और उस्तादों के बीच की दूरियों का कम होना शुरू होना और इसके लिए भयमुक्त शिक्षण –प्रशिक्षण का वातावरण का निर्माण प्रक्रिया का लगभग आरंभ होना।

- बच्चों के कार्य को सराहा जाने लगा है। इससे बच्चों में अपनी भागीदारी के प्रति आत्मविश्वास का क्रम बढ़ता दिखाई पड़ रहा है।
- मिर यात्रा शिविर में अन्य गायन और वादन पंथियों का स्वैच्छिक रूप से जुड़ाव होना।
- मिर समुदाय अपनी संवहनीयता को बरकरार रखने के लिए इस मिर यात्रा से छूटे गाँव के सदस्यों के साथ मिर यात्रा के अनुभवों को समयानुसार यहाँ के संभागी साझा कर रहे हैं।
- मिर सामुदायिक वार्षिक तिथिपत्रक कि तैयारी के लिए रणनीति बनाने पर विचार आरंभ होना।

यात्रा सुगमकर्ता के अनुभव

लगभग पाँच वर्ष के बाद बनी एक नयी नवेली उत्सुकता के साथ मिर यात्रा का यह पहला पर्व अपने निर्धारित योजना के अनुसार आगे बढ़ा। मिर समुदाय के लिए यह एक और मजबूत मौका है। जब यह समुदाय अपने अस्मिता के परचम को स्थानीय सामाजिक अर्थनैतिक पर्यावरण में लहराना चाहता है। इस दिशा में मिर यात्रा परियोजना का धरण एक सहज और सामुदायिक धरण है। जिस ऊर्जा के साथ इस सामुदाय ने पहले पर्व की शुरुआत की है। यह बहुत ही उम्दा स्थिति है। क्यों की यह एक लंबी और गंभीर मंथन प्रक्रिया से गुज़री है।

इस पर्व में मिर परिवारों का एकत्र होकर इस परियोजना के पूर्व और पश्चात पहलुओं पर गंभीर विमर्श प्रक्रिया में जुड़ाने के द्वारा अपनी भागीदारी सुनिश्चित की है। यह मेरे ख्याल से अभी तक के पर्व में यह एक मजबूत उपलब्धि है। ऐसा लगता है कि सम्मेलन के बाद अब इस परियोजना में तमाम विमर्श तो शामिल हैं ही पर एक कमी सी महसूस होती है कि क्या सम्मेलन के कुछ और सदस्यों को इस परियोजना के प्रक्रियाओं से जोड़ा जा सकता है। क्योंकि इस परियोजना में एक समुदाय के सांगठनिक प्रसार का आसार गुथा हुआ है। जो मिर परंपरा को आगे ले जाने में एक पहिये कि भांति अपनी भूमिका का निर्माण करेगा।

मिर यात्रा का यह पहला पर्व मजबूत और आगे बढ़ाने की सीख देता हुआ। अपनी समय सीमा में अनुभव का निर्माण कर गया है। यह एक अच्छी स्थिती है। इस समुदाय के लिए लेकिन शायद और भी एक अच्छी स्थिति होने की संभावना इसमें ही छुपी हुई है। जिसको उजागर करने में हमें पुनः जूझने की आवश्यकता है।

मिर यात्रा का द्वितीय पर्व

मिर यात्रा का प्रथम पर्व 15 सितम्बर से 15 नवम्बर, 2015 तक तीन गाँव के 33 संभागियों के साथ रही है। इसी क्रम में मिर यात्रा के द्वितीय पर्व की शुरुआत माह जनवरी, 2016 के तृतीय सप्ताह से आरंभ किया जाना तय हो रहा है। माह अक्टूबर से 'ग्वांर' नामक फसल की तैयारी में इन्दिरा गांधी नहर के आस-पास के गाँव इस कृषि में व्यस्त होने लगते हैं। इसके कारण यह दूसरा पर्व माह जनवरी 2016 से ही होने की संभावना बन रही है।

मिर यात्रा के कार्य योजना को विगत मे ही कृषि तिथि के अनुसार सामुदायिक परियोजना का निर्धारण किया गया है।
इस दूसरे पर्व के दौरान मिर कलाकारों की आपसी मुलाकात कम ही हो पाती है। मिर आलम का पुर का पूरा परिवार अपने अनुभव और शारीरिक क्षमता के अनुसार कृषि कर्म में अपने को सुनियोजित रूप से जोड़ते हैं। इन कृषि माह में शिविर व्यवस्थात्मक बैठकों का आयोजन भी केवल कड़ी जोड़ने के उद्देश्य से ही हो पता रहा है। जिसका मुख्य उद्देश्य यह रहा है कि कृषि कर्म के मध्य में मिर संगीतीय अभ्यास और शिविर से संबन्धित चर्चाओं को किया जा सके।

इस कृषि अवधि के बाद के कार्य योजना को पुनः देखना समझना और स्थिति अनुसार योजना को फलीभूत करना। मिर यात्रा के द्वितीय पर्व में मिर यात्रा का प्रशिक्षण शिविर के स्थान पर केवल एक लघु बैठक ही हो पायी है। इसलिए इस चरण को मिर यात्रा के मध्य पड़े कृषि पड़ाव के लिए एक अल्प विराम स्थिति है। समुदाय के साथ कार्य के लिए सम्पूर्णता में बने कार्य योजना सामुदायिक परियोजनाओं को मजबूती और सार्थकता प्रदान करते हैं। क्योकि जीविका के जद्दोजहद में यह इस समुदाय का एक अहम कार्य है। इस मिर समुदाय की समकालीन खूबियों में भी यह एका है। जब देश में तमाम संकटों में कृषि और कृषक का संकट है ही।

मिर अपने संगीतिय परंपरा को नियमित अभ्यास के साथ ही साथ अपने कृषि अभ्यास की भी निरंतर बरकरार किए हुए है। कला और कृषि का एक समागम भी इस समुदाय में परिष्कृत रूप से प्रकाश में आता है।

इस पर्व की यात्रा में निष्पत्ति

इस पर्व के स्वरूप को मिर शिविर का पर्व के स्थान पर मिर शिविर के लिए पर्व कहना ज़्यादा अर्थपूर्ण लगता है। इस पर्व की अपनी खासियत यह है कि इस पर्व में शिविर संभागी अपने कृषि कर्म में तो जुड़े ही हैं। इसके साथ मिर शिविर के संचालन संबंधी व्यवस्थाओं को लेकर उपलब्धता अनुसार कुछ सदस्य एक जुट होते हैं। प्रशिक्षण शिविर न चलते हुए भी इस समुदाय के मनो –मस्तिष्क में शिविर का चलना इसके लिए फिक्रमंद होना। इस पर्व की यह महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह पर्व और प्रक्रिया इस परियोजना के दौरान आने वाले अन्य कृषि अवधि के साथ समागम के लिए एक अच्छा अनुभव है। जो शिविर में भागीदारी को बढ़ाती है और मिर कमेटी द्वारा कार्य योजना बनाने के अभ्यास को मज़बूत बनाती है।

यात्रा सुगमकर्ता के अनुभव

इस कृषि अवधि को इस परियोजना में स्थान के लिए सभी व्यक्तियों का संस्था और मिर समुदाय को मैं तो बहुत ही धन्यवाद कहूँगा। क्योंकि ऐसि सामुदायिक कार्यविधि का विरलय ही उपयोग हो पाता है। और इस बात का के लिए भी की समुदाय के लोग कृषि में व्यस्त होने के बाद भी कुछ समय निकालते रहे हैं ताकि इस परियोजना से संबन्धित विमर्शों को निरंतरता दी जा सके। आसा है की यह परियोजना प्रत्यक्ष विराम आने वाले परियोजना पर्व के लिए खास साबित होगा।

मिर यात्रा का तृतीय पर्व

इस तृतीय पर्व की शुरुआत सन् 2016 माह अप्रैल से आरंभ कर दिया गया। मिर यात्रा के इस पर्व में मिर प्रशिक्षण शिविर की निरंतरता और नए गाँव के मिर समुदाय के साथ बैठकों का आयोजन मुख्य क्रियान्वयन रहा है। क्रियान्वयन की दिशा में नवीन मिर समुदाय ग्राम गड़ियाला और रामसर में मिर यात्रा की शुरुआत करने के बाबत बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों में मिर यात्रा के उद्देश्यों एवं प्रकृति पर मिर कमेटी के सदस्यों के द्वारा विस्तृत रूप से विचार साझा किया गया। इन ग्रामों के मिर समुदाय के सदस्यों को इस मिर यात्रा से जुड कर इस मिर परंपरा को विस्तारित करने के लिए प्रस्ताव रखा गया।

मिर यात्रा चयनित और संचालित ग्रामों के सदस्यों के साथ विस्तृत रूप से भी विचार-विमर्श पर संगीतमय बैठकों को रूपायित किया गया। रूपायित किए जा रहे इस बैठक में नवीन शागिर्दों से उनके अनुभवों को जानने का अवसर भी मिला। इसके साथ ही साथ उस्तादों के प्रशिक्षण तरीकों पर विमर्श किया गया। इस विमर्श में शागिर्दों को उनके प्रतिदिन के अनुभवों की डायरी को लिख कर या चित्र से साझा करने या किसी कलाम के माध्यम से साझा करने या किसी अन्य तरीके से साझा किया जाना चाहिए। इस पर एक सामूहिक निर्णय बनाया गया कि इस डायरी को नियमित तौर पर प्रशिक्षण शिविर में सुनने और बात करने के अवसर को भी निकालना चाहिए।

इस दिशा में चर्चा के साथ यह बता भी रखी गयी कि सामुदायिक शोध और सामुदायिक तिथि पत्रक का निर्माण और इस दिशा में निर्धारित कार्यों को आगे पहुंचाना चाहिए। इन सामूहिक विचारों व इन कार्यों को रूपायित करने के लिए क्रियान्वयन योजना बनाई गई। समुदाय के आपसी असहमतियों एवं विचारों पर मिर यात्रा के प्रशिक्षण शिविर के आगामी चरणों के लिए प्रबंधन व प्रशिक्षण से जुड़ी सामूहिक सहमतियाँ तय हुईं।

माह अप्रैल से तृतीय चरण को आगे बढ़ाया गया। इस सत्र में विगत चरणों से चल रहे मिर यात्रा प्रशिक्षण शिविर के प्रशिक्षण की निरंतरता को बरकरार रखा गया।

कृषि अवधि के बाद आरंभ हुए परियोजना के इस पर्व में मिर कमेटी और शिविरों के साथ हर बार की तरह फिर से बैठक का आयोजन किया गया। यह आयोजन तीन दिन अलग-अलग गाँव में चला। इस बार एक नए गाँव गड़ियाला में भी बैठक का आयोजन किया गया। इस गाँव की खूबी यह थी की यहाँ माण्ड गायन शैली का प्रभाव अधिक है। यहाँ के अधिकत्तर मिर गायक माण्ड शैली को ही गाते हैं। इनके जुडने से इस यात्रा में एक और नया आयाम जुड़ेगा लेकिन संभावनाएँ कम ही लग रही हैं। क्योंकि यहाँ के मिर समूह में आपसी शिविर के देहाड़ी की अपेक्षा कुछ ज़्यादा है। जो इस परियोजना से अभी तक बाहर की बात है। खैर आने वाले मिर कार्यों में इस गाँव के साथ बातचीत का सिलसिला बना रहेगा।

अब तक पाँच मिर शिविर इस परियोजना में अनुभव बना चुके हैं। इनमें से मिरगढ़, पूगल, भानिपुरा, रामड़ा और रामसर गाँव रहे हैं। शिविरों के इन स्थानों में आस-पास के पड़ोसियों के जुडने और प्रशिक्षण के समय –समय बैठने से लगभग समूचे इलाक़े में एक लहर दौड़ रही है कि मिर समुदाय किन्ही बड़े कार्यक्रम की तैयारी में जुटे हुए हैं। इन मिर परिवारों के साथ कई अन्य बाहरी व्यक्ति एवं संस्था भी इनके साथ जुड़ी हुई है। जो इनको नित प्रोत्साहित करने के लिए मिर समुदाय के पास खड़ी है। यह एक बहुत ही सकारात्मक घटना है। जो मिर समुदाय के विस्तारण की दिशा में एक संबल प्रदान करती है।

इस पर्व की यात्रा में निष्पत्ति

तीसरे पर्व में कुछ चुनिन्दा उपलब्धियों को मैं यहा साझा करूंगा। दूसरे पर्व में हुए मिर सदस्यों विराम का एवं लघु बैठकों का इस परियोजना में खास प्रभाव यहा पड़ा की इस तृतीय पर्व में काफी ऊर्जा प्रवाहित नज़र आती है और अपने कार्य योजना को निर्धारित तरीके से पूर्ण करने की उत्सुकता बनती है। इससे इस चरण में एक नए गाँव रामसर में भी इस यात्रा को आरंभ करने का सूत्रपात घटाया जाता है। यही नहीं मिर कमेटी के वह सदस्य भी सामने अगुआई करना शुरू कर देते है। जो इस कमेटी में अभी कम अनुभवी माने जाते रहे हैं। इससे मिर समुदाय के साथ बसोबास कर रहे अन्य पड़ोसी समुदायों में मिर परिवारों के प्रति सम्मान में इजाफा भी दिखाई देता है। आस –पास के पड़ोसी और पड़ोसी गाँव के लोग इस परियोजना के बारे में जानने समझने के लिए मिर आलमों से संवाद की गतिशीलता को भी बढ़ा रहे हैं। इससे मिर परंपरा को स्थानीय पहचान मिलने में अच्छी ख़ासी मदद मिल रही है।

मिर समुदाय के स्थानीय पहचान को और भी विशिष्ट बनाया जा सकता है। बनिस्बत इसके की इस मिर समुदाय की या किन्ही अन्य समुदाय की जो संगीत परंपरा का प्रवाह है। केवल यही संगीत परंपरा ही स्वतंत्र कला भाषा है को माना जा सकता है। लेकिन अगर इसके साथ सामुदायिक पारंपरिक व्यवहार जैसे लिंग भेद आयु भेद आदि की पड़ताल करें और इसको प्रशिक्षित करें। समुदाय में पीछे छूटे जा रहे अन्य सदस्यों जैसे महिला, बच्चे आदि को एक साथ अवसर दें इनके अभिव्यक्ति का अवसर बनाए। तो यह पहचान और भी विशिष्ट बनाई जा सकती है। क्योंकि किसी भी कला अभ्यास करने वाली समुदाय की कला अपने में एकांत भाव से तो चलती नहीं है। इसके प्रेरक और वाहक और कारक उस समुदाय का प्रत्येक व्यक्ति है। जो इस समुदाय की तमाम परंपरा को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अभ्यास करता है। यह मिर यात्रा परियोजना एक सामुदायिक परियोजना है। जो इस मिर समुदाय की अस्मिता का स्थापन करती है। इसलिए इस परियोजना में इसके अवसर की गुंजाइश भरपूर जान पड़ती है। इस पर कमेटी के कुछ सदस्यों के साथ इस पर्व में अनौपचारिक चर्चा का अवसर बन पाया है और इससे कमेटी के सदस्य इन मुद्दों पर अपने अनुभवानुसार मंथनरत होने लगे हैं।

यात्रा सुगमकर्ता के अनुभव

भानीपुरा बैठक में यहाँ चल रहे शिविर की प्रकृति को पुनः जानने और समझने का अवसर रहा था। इस शिविर में उस्तादों और शागिर्दों के प्राशिक्षणीक संबंध पर चर्चा होना इन शिविरों की ज़रूरत जान पड़ती है। यह स्वीकार करने में कत्तई गुरेज नहीं है की इनकी अपनी पारंपरिक प्रशिक्षण और प्रस्तुति शैली है। इस शैली पर कोई संदेह नहीं पर मूल रूप से कहना चाहता हूँ कि शागिर्दों को इनके उस्तादों के द्वरा समानुभूति और बच्चों को छोटा या कम तर न आंक कर इनको बराबरी का आहोदा देना ज़रूरी लगता है। क्योंकि यह अक्सर कई शिविरों में देखने में आया है कि प्रत्येक मिर बैठकों में उपस्थित बच्चे केवल असक्रिय श्रोता से दिखाई पड़ते हैं या इस बैठक की चाय –पानी जैसी ज़रुरतों को पूरा करते दिखाई देते हैं। इसका बच्चे शागिर्दों पर बहुत ही रूढ़िगत प्रभाव पड़ता है। इनके प्रशिक्षण को प्रभावित और गैर रुचिकर बनाता है। मिर महिलाओं की और बच्चों की स्थिति का जायजा अगर किया जाए तो दोनों लगभग एक जैसे लगते हैं। इस ऐतिहासिक भूत को अभूत बनाने में हम क्या सोच रहे हैं यह भी परियोजना के किन्ही चरणों से जुड़ने या जोड़ने के लिए हमें मंथनरत होने की आवश्यकता है। यह सभी बिन्दु असल में मिर परंपरा के विस्तारण और स्थापन प्रक्रिया या लक्ष्य से एकदम जुदा नहीं हैं। यह सभी एक समुदाय के संवहनीयता में मजबूत हिस्सा लेते हैं। हमें परियोजना की व्यस्तताओं में इनको अनदेखा नहीं करना मिर समुदाय के लिए ज़्यादा कारगर होगा। कई बार कहीं सुनाई पड़ता है कि इस समुदाय के साथ कला और इसके सौदार्य को बचाना है आगे ले जाने में सहायक होना है। पर ऐसा कई बार लगता है की दोनों मुद्दों यानि जेंडर और बच्चों की सामुदायिक भूमिका को जुदा करके देखना कितना उचित होगा। मेरा मत है कि यह एकसाथ गुथी हुई विकासीय प्रक्रिया है इसको जुदा नहीं किया जा सकता। इसीलिए मैं इसकी सिफ़ारिश भी कर रहा हूँ कि परियोजना में और इसके प्रसारण और क्रियान्वयन में इन दूरियों को पाटने की गतिविधियां समाहित हों। मिर महिलाओं के हस्तकला को देख लगता है की मिर समुदाय का यह समूह अपनी अभिव्यक्ति के लिए हमसे कानाफूसी कर रहा हों।

इन तमाम जदोजहद के साथ इस मिर यात्रा में इसकी भरपुर संभावना भी दिखाई पड़ती है। जो इस मिर यात्रा के मौलिक उपलब्धियों में एक होगा।

रामसर बैठक का मुख्य मुद्दा यहाँ के मिर गायकों और वादकों जिनका सरायकी गायन शैली की विशेषता है को मिर यात्रा से जुडने का प्रस्ताव साझा करना रहा और अब तक के मिर गाँव में यह गाँव अपने आप में सबसे जुदा दिखाई दिया। यहाँ गाँव के रुलिङ्ग में दूसरे अन्य प्रभावी समुदाय हैं। जो इनके धार्मिक अभ्यास को कमतर आँकते हैं।

गाँव गड़ियाला के इस बैठा और मुलाकात में माण्ड शैली के इतने अधिक मिर गायकों व वादकों से मुलाकात हो जाएगी, यह परे था। परंतु इस बैठक में मुलाकात के साथ ही साथ इनके सामुदायिक अनुभवों को और इनकी माण्ड अभ्यास परंपरा को भी सुनने का अवसर मिला। मिर समुदाय के साथ अभी तक के बैठकों में खास कर इस चरण के बैठको में इस बैठक में उपस्थित सदस्यों की संख्या लगभग 35 के आस-पास रही। इस बैठक में अधिकत्तर सदस्यों ने अपनी कला को प्रस्तुत किया और मिर यात्रा के प्रकृति एवं उद्देश्यों पर उपस्थित मिर कमेटी के सदस्यों ने इस परियोजना की प्रक्रियाओं को विसत्र से साझा किया। इस बैठक में यह आभास प्रतीत हो रहा है की यह गाँव इस मिर यात्रा में अवश्य जुड़ेगा लेकिन यहीं एक शंका भी है कि मिर यात्रा में तय किए गए साझा मानदेयों से इस बैठक के साथनीय मुखिया न खुश भी दिखाई दिये। खैर यह अहम नहीं है कि इनको मानदेय क्या मिलेगा। पर इनकी अपनी मजदूरी व्यस्तताओं के चलते यह इस शिविर के लिए कैसे सामी निकाल पाएंगे पर सामूहिक विचार –विमर्श प्रक्रिया में है। इस गाँव के जुडने से मिर यात्रा में एक बड़ा हुजूम जुड़ेगा जो मिर यात्रा के संदर्भों से रूबरू है और मिर यात्रा को विस्तार मिलेगा इस भूगौलीक दिशा में भी।

इस चरण में यह मुझे यह महसूस भी होता है कि क्यों न मिर कलाकारों के लिए तमाम गतिविधियों का भी आयोजन किया जाए जहां संगीत के वैश्विक इतिहास की बात हो। संगीत के तमाम सदियों में समाज के साथ समुदाय के साथ के रिश्ते की पड़ताल का अवसर हो। कला जब अस्मिता के स्थापन की भाषा बनती है। तब समय के सिने पर खड़ा कलाकार अपना सामी निर्माण करता है और स्थापित स्टेट के विपरीत एक नए संभवना की दिशा में जन मानस के आंतरिक कोलाहल को शैली बनाता है। तब एक जन समुदाय के उभरने की उम्मीद और पक्का हो जाती है। इस बात से मैं यह कहना चाहता हूँ कि परियोजना के स्वरूप में समुदाय अस्मिता के स्थापन के साथ ही साथ इसके वाहकों का कललकारों का सामाजिक भावनात्मक रुझान ज़रूरी जान पड़ता है और इस इस परियोजना में या कभी की परियोजना में संगीतिय परिदृश्य के साथ ही साथ समाज के अन्य कारकों का समावेश करना चाहिए। जैसे संगीत और जेंडर संवेदनशीलता, कलाकार बच्चों का कलाकार व्यसकोण के साथ संबंध, समाज और मिर परंपरा का रिश्ता आदि मुद्दों को संगीतिय परमपपरा के साथ जोड़ना ताकि मिर कला को समाज की चोटी तक पाहुचाया जा सके और इस यात्रा में सभी मिर महिलाएं, बच्चे एक साथ विविध अनुभवों का निर्माण करें।

मिर कमेटी का आपस में चर्चा की गतिविधियों को और भी अधिक निरंतरता देनी होगी। संभागियों में खास कर शागिर्द और उस्ताद के मध्य अनुभविक एवं संदर्भ संवाद का अवसर निकालना आवश्यक जान पड़ता है। इस मिर शिविर में उस्तादों द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षण के आयामों को कलम बद्ध की भी अवश्यता लग रही है। मिर परंपरा एवं अन्य समुदायों से संवाद में यह प्रक्रियाएँ काफी कारगर साबित हो सकेंगी।

मिर यात्रा का चतुर्थ पर्व

मिर यात्रा के इस चौथे चरण की शुरुआत जुलाई के अंतिम सप्ताह में न होकर अगस्त के प्रथम सप्ताह से शुरू हुआ। इस चरण में मिर कमेटी ने प्रत्येक शिविर का जायज़ा लिया इस उद्देश्य से कि सामुदायिक शोध कार्य को आगे बढ़ाया जा सके। इस शोध कार्य में पहले से निर्धारित कुछ निम्न बिन्दु रहे हैं एवं ऐसे ही इस तिथि पत्रक का एक प्रारूप भी तैयार किया जा रहा है। जो मिर समुदाय की महिलाएं अपने हस्तकला के द्वारा निर्मित करेंगी और इसकी संरचना अपने आप में सामुदायिक केंद्रिक है। इस पत्रक को आगामी चरण में संभावित साझा किया जाना तय हो गया है। मिर यात्रा के समेकन की दिशा में 'मिर सूफी-संत संदेश यात्रा' का मिर सामुदायिक ग्रामों में आयोजन को निर्धारित किए जाने का आग्रह रहा है।

'मिर संदेश यात्रा' इस पूरी परियोजना का एक समेकित चरण है। इस 'मिर सूफी-संत संदेश यात्रा' में रामड़ा, पुगल, मिरगढ़ –(1पीबी), भानिपुरा और रामसर इन मिर ग्रामों में मिर यात्रा के प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इन्हीं प्रशिक्षण शिविरों से एक या दो शागिर्दों का चयन मिर कमेटी द्वारा कर एक समूह बना रही है। यह समूह शिविर संचालित ग्रामों के साथ ही साथ इन ग्रामों के पड़ोसी ग्रामों में जहां मिर यात्रा परियोजना नहीं चल पायी। इन ग्रामों में भी यह समूह जा कर अपने मिर परम्परा की प्रस्तुति व इस परम्परा को विस्तार रूप देने के लिए अपने कला की प्रस्तुति एवं स्थानीय समुदायों के साथ मिर परंपरा को स्थान देने के लिए साझा संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से निर्धारित की जा रही है।

इसी दौरान मिर समुदाय के साथ सुमना, सपना एवं भावना (आई. एफ. एम. आर.) एवं मेरे साथ शिविर सदस्यों ने मिर यात्रा से जुड़े मुद्दों पर प्रकाश डाला तथा दो दिवसीय अलग-अलग शिविरों में सामूहिक संवाद चला। इस संवाद का केंद्र बिन्दु आई. एफ. एम. आर. सदस्यों द्वारा मिर समुदाय से मिर यात्रा परियोजना के मुख्य स्वरूप को जानने की जिज्ञासा रही और इस मिर यात्रा से संभावित उपलब्धियां, मिर समुदाय का भूगौलीक जायज़ा लेना व परियोजना में आ रही चुनौतियों पर विस्तृत रूप से आपसी चर्चा व विमर्श भी किया गया।

इस पर्व की यात्रा में निष्पत्ति

अगस्त से 20 अक्टूबर-2016 तक इस चतुर्थ चरण में निर्धारित योजना के मुख्य उपादान प्रशिक्षण शिविर को निर्धारित तरीके से संचालन किया गया एवं शिविर के अन्य सहयोगी कार्यों की प्रक्रियाओं को भी सुचारु रूप से संचालन किया गया। इन संचालीत गतिविधियों में इस चरण जो विशिष्ट उपलब्धियां रहीं वह नीम्न प्रकार से हैं: सामुदायिक शोध की प्रक्रिया का एक्शन प्लान संबन्धित समुदाय व व्यक्तियों के साथ शुरू किया जाना तय हो रहा है, सामुदायिक तिथि पत्रक का प्रारूप तय किया जाना, प्रशिक्षण शिविर में शागिर्दों की एकल प्रस्तुतियों को प्रोत्साहित करना व इनको मिर सूफी-संत संदेश यात्रा से जोड़ना।

यात्रा सुगमकर्ता के अनुभव

चौथा पर्व इस पर्व का श्रेय इसके विगत वाले पर्व पर जाता है। क्योंकि इस पर्व में भी एक क्रमिक विस्तारण की निष्पत्ति प्रकाश पा रही है। जैसे की इस पर्व में 'मिर सूफी-संत संदेश यात्रा'। इस कार्य योजना का अगर हम पड़ताल करेंगे तो इसके सूत्र वहीं से खुलने लगते हैं। जहां से समुदाय और मिर कमेटी के सदस्यों के साथ विगत चर्चाएँ स्थापित की गयी हैं। कि समुदाय में छूटे जा रहे अन्य सदस्यों को अवसर देने के लिए अवसरों का निर्माण करना। जो इस मिर सूफी-संत संदेश यात्रा में परिलक्षित भी होता है। इस कार्यक्रम में शागिर्द बच्चों को भी अपनी कला प्रदर्शन का खास अवसर मिलेगा। इससे इनके प्रस्तुति प्रासंगिक आत्मविश्वास का निर्माण होने के आसार नज़र आते हैं। लेकिन अभी तक के इस चरण में मंच पर प्रस्तुति को लेकर केवल बच्चों तक तो बात आ पहुंची है। पर महिलाओं के कला के मंचन का अवसर अभी दूर ही दिखता है बनिस्बत इसके की यह मिर महिलाएं मिर समुदाय के लिए बन रहे सामुदायिक तिथिपत्रक के ढांचे को अपनी हस्तकला से संजोएंगी। खैर छोटे-छोटे क़दमों से एक बड़े जंगल को भी पार किया जा सकता है। इसके उम्मीद से अभी तक की प्रक्रिया में यह खास है कि यह एक खास उपलब्धि है। जहां शागिर्द बच्चे स्वयं अपने प्रस्तुति को नियंत्रि भी करेंगे और मिर महिलाओं को सम्मेलन के बाद पुनः अपनी अभिव्यक्ति का व्यवस्थित अवसर प्राप्त होगा।

मिर समुदाय और परियोजना के संस्थानिक संचालकों के साथ इस पर्व में अच्छी ख़ासी विमर्श स्थिति बनी रही है। इस परियोजना में एक सूत्र बना है। जिसे हम परियोजना में गुथे हुए सूत्र को धैर्य कह सकते हैं। और इस धर्य की समय-सीमा को संचालित करने के लिए सम्पूर्णता में मंथन किया जाता रहा है। जिसका परिलक्षण, जिसकी प्राप्ति बहुत ही सूक्ष्म दिखाई देती है। यह सामुदायिक आंकड़ों के साथ गुणवत्ता की दिशा में चलती है। इसको जाँचने परखने के लिए सामुदायिक और भूगौलीक दृष्टि का होना अनिवार्य सा लगता है। ऐसा सुनने में आया है किन्ही संस्थानिक सदस्यों को लगता है की परियोजना की गाड़ी बहुत धीमी और गैर परिवर्तनीय है। यहीं पर मैं कहना चाहूँगा की परियोजना एक माध्यम है। जो इस मिर समुदाय को इसकी पारंपरिक कला के साथ संपूर्णता में इसकी अस्मिता स्थापित कर रही है। इसमें यह संभव है की यह गति धीमी हो लेकिन गैरपरिवर्तनीय से मेररी सीधी अस्वीकारता है। क्योंकि कला संपूर्णता में समुदाय के साथ गुथी होती है। यह अलग से कोई एकांत वस्तु या प्रक्रिया नहीं है। जैसे पानी के साथ गुथे हुए पानी के अवयव होते हैं। समुदाय की कला का विस्तारण समुदाय के सामाजिक मूल्यों के साथ आगे बढ़ती है। अपने सामाजिक अस्मिता के नित नए मूल्यों का आविष्कार करती है। यह परिलक्षण परिवर्तनीय एक और धारा है। जो सामुदायिक कारकों के संग धीमी गति के साथ परियोजना के माध्यम से रूपायित हो रही है।

Wharton
EXECUTIVE EDUCATION
execed.wharton.upenn.edu

मिर यात्रा का पंचम पर्व

मिर यात्रा के पंचम व समेकन पर्व का संचालन नवम्बर माह के प्रथम सप्ताह से दिसंबर माह तक प्रत्यक्ष रूप से चला। इस दौरान प्रशिक्षणों का क्रम तो बना ही रहा और साथ ही में उन कार्य योजनाओं को भी अंजाम दिया जा रहा था। जो इस परियोजना में प्रत्यक्ष रूप से गुथे हुए थे। इनमें मुख्य रूप से सामुदायिक तिथिपत्रक इसका वितरण शामिल था। प्रत्येक शिविर से चयनित कुछ शागिर्दों और स्थानीय स्वैच्छिक रूप से जुड़े कुछ गायकों-वादको का संयुक्त तत्वावधानिक स्थानीय प्रस्तुति शामिल थी। जिसमें शिविर से मुख्य रूप से शागिर्द बच्चों की भागीदारी निर्धारित की गयी थी। इस कार्य योजना को मिर सूफी-संत संदेश यात्रा के नाम से स्थानीय स्तर पर शिविरों वाले स्थानों में ही रूपायित किया गया है।

इसके साथ ही कुछ अप्रत्यक्ष जिम्मेदारियाँ भी परियोजना में शामिल थी। जो अप्रत्यक्ष होते हुए भी अपना महत्व रखती है। इन जिम्मेदारियों में मुख्य रहे थे। मिर शिविर से जुड़े युवा शागिर्दों के द्वारा स्थानीय मिर परिवारों की सूचना इकठ्ठा करना और संभावित स्थानों जैसे की मिर गाँव में, उर्स समितियों के साथ मिर सामुदायिक तिथि पत्रक को साझा करना।

इन दोनों प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कारकों उद्देश्यों में महिलाओं और बच्चों की भागीदारी को सुनिश्चित करने के अवसरों का निर्माण करना भी तो शामिल ही रहा है। इन उद्देश्यों के समागम को मिलाकर उभरता है मिर यात्रा के संपूर्णता लिए हुए उद्देश्य।
इस पर्व तक आते –आते मिर कमेटी अपने आप में परिपक्व व्यवहार में तब्दील होती सी दिखाई देती है और इस पर्व में हो रहे कृषि अवधि और परियोजना के समेकन क्रियान्वयन की चुनौतियों को बहुत ही सावधानी से सुलझाने का प्रयास किया है। जैसे कि विगत चतुर्थ पर्व में इस पंचम पर्व के लिए जो कार्य योजना साझा किया गया था। उसमें कृषि कैलेंडर के संगम कि कहस चुनौतियाँ आ रहीं थी कि कसिए मिर सूफी-संत संदेश यात्रा को आयोजित किया जाएगा। इस संदर्भ में शिविर दर शिविर अपनी उपलब्धता के अनुसार इसको आयोजित कर सकता है। यह विचार बहूत ही प्रभावी रही। इससे इस मिर परियोजना को प्रत्यक्ष समेकन करने में सुविधा हुई। इस अपरियोजना के प्रत्यक्ष समेकन के बाद भी यह कमेटी और समुदाय अपने –अपने शिविर स्थानों पर अप्रत्यक्ष जिम्मेदारियों को निरंतर अभ्यास में रख रहे हैं।

इस निरंतर अभ्यास से मिर परिवार अपने परपरा को संपूर्णता में निहारने के अवसरों और व्यवहार का रूपायन घटा रही है। जो इस परियोजना में अप्रत्यक्ष निरंतरा बनाए हुए है। यानि परियोजना का प्रभाव अनिश्चित कालीन निरंतरा लिए हुए है।
जो मिर संगीतिय परंपरा को स्थापित करने में मुख्य भूमिका बना रही है। और स्थानीय संस्थाओं, उर्स समितियों आदि के साथ एक मजबूत अंतरंगता बना रही है। और अपने संगीतिय परंपरा के संग मिर सामुदायिक संवहनीयता के साथ अन्तःक्रिया कर रही है।

यह समेकन पर्व बहुत ही प्रेरक और ऊर्जामय बना रहा है। एक अद्भुत अनुभूति हो रही है मानो एक नयी दिशा में नयी सांस का प्रवाह। मिर यात्रा से जुड़े शिविरों में एक मजबूत आत्मविश्वास की किरण बालू के टीलों पर जगमगाती हुई दस्तक दे रही है। यह दस्तक किन्ही खास समय में नहीं बल्कि वर्षों के तजबीज और कठिन सफर से निर्मित होने लगी है। जो मिर समुदाय के संगीतिय धरोहर के विस्तारण में एक महतवपूर्व चरण है।

इस पर्व की यात्रा में निष्पत्ति

या पांचवा और परियोजना का समेकन पर्व बहुत ही व्यस्त पर्व रहा और यह व्यस्तता तब और भी बढ़ जाती है। जब दो अनिवार्य क्रियान्वयनों को एक साथ संचालित किया जा रहा हो। ठीक ऐसे ही इस पर्व में भी रहा कृषि कर्म और मिर यात्रा का पूर्व निर्धारित योजना। इस अवधि के दौरान मिर आलमों में योजना को लेकर आपसी तारतम्यता बनी हुई महसूस होती है। इससे उन उपलब्धियों को प्राप्त किया जा सका है। जो अभी तक कुछ संदेहावस्था में घिरी हुई थी। जैसे की मिर महिलाओं के सहयोग से तिथिपत्रक का बनना और इसका निर्धारित स्थानों पर साझा करना। मिर यात्रा के अंतिम पड़ाव के कार्यक्रमों में बच्चों की भागीदारी का बढ़ना आदि। इन प्रत्यक्ष क्रियान्वयनों से मिर समुदाय अपने पैरों पर खड़ा होता दिखाई देता है। जैसे की जिनको अभी तक मिर परंपरा में अभिव्यक्ति के अवसर मिल रहे हैं। वो अपने –अपने अनुसार अपनी भूमिका बना पा रहे हैं। यह समुदाय के स्व की शुरुआत होती है। समुदाय के वृहद उद्देश्यों के साथ हाथ मिला कर जब समुदाय के सदस्य अपनी भूमिका स्वयं बनाने लगे। इसमें अभी भी वहीं गुंजाइश है। जो पहले बात की जा चुकी है की छूट रहे सदस्यों की भागीदारी के अवसर बनना। पर इस दिशा में भी मुझको यह आभास हो रहा है कि कुछ शिविर अभी भी महिलाओं और बच्चों के साथ अभिव्यक्ति निर्माण के अवसर खोजने के अभ्यास कर रहे हैं।

केंदिक तरीके से अगर कहा जाए कि इस पर्व कि उपलब्धियों में सबसे खास क्या रहा है। तो मैं झट से कह दूंगा की मिर यात्रा के इस पड़ाव में वो लोग भी जुडने की संभावना बना पा रहे हैं। जो ऐतिहासिक तौर पर भी छूट गए हैं। खास कर महिलाएं और बच्चे। इसमें एक और खास उपलब्धि हुई है कि तिथिपत्रक ने मिर परिवारों को स्थानीय तौर पर महत्व दिया है। इससे मिर समुदाय को अपनी अस्मिता के स्थापन में स्थानीय पड़ोसियों और श्रोताओं का साथ मिल सक्ने की पूरी आशा है। इससे मिर परंपरा के श्रोतायुक्त कार्यक्रमों में इजाफा भी हो रहा है। जैसे की पंचम पर्व के समेकन के बाद स्थानीय कुछ शिविरों को स्थानीय कार्यक्रम मिल रहे हैं। यह कार्यक्रम पहले भी मिलते रहे हैं लेकिन अभी इनकी संख्या बढ़ रही है और मिर परिवारों और कलाकारों की पारंपरिक सम्मान को पुनः स्थान मिलने की एक सार्थक और सकारात्मक पहल फिर हो पा रही है।

यात्रा सुगमकर्ता के अनुभव

यह पर्व भी उत्साहित और उत्सुक पर्व रहा है। उत्सुक इस दिशा में की क्या परियोजना की अपेक्षाओं को इस पर्व में पूरा क्या जा पाएगा। जब की यह एक कृषि कैलेण्डर में अहम अवधि है। पर मिर कमेटी के परिपक्वता में बढ़ोत्तरी हुई दिखाई देती है। इन्होने बहुत ही सावधानी पूर्व निर्धारित कार्यों को पूरा किया है। समेकित किया है। इसमें मजबूत यह बात भी है की स्थानीय अन्य समुदाय के लोग भी इस गतिविधि में सहायता बना रहे थे। यह मिर परिवार के लिए एक सकारात्मक पहलू है।

इनमें से कई अन्य समुदाय भी मिर परंपरा के इस परियोजना के तौर तरीके के साथ तत्वावधानिक कार्यक्रमों की रूपरेखा खींच रहे हैं। जैस कई मिर परिवारों के गाँव में मेघवाल समुदाय के परिवार भी रहते है। इस समुदाय में भी गायन और वादन खास कर केवल भजनों के गायन का प्रचलन रहा है। यह समुदाय भी मिरों के साथ जुडने का प्रयास कर रहा है। यह प्रक्रिया एक-दूसरे के श्रोताओं के साथ अन्तःक्रिया की भी प्रक्रिया है। इससे मिर समुदाय को और भी श्रोता मिल सकेंगे और वर्तमान समय के सामाजिक महासंकटों में एक जुट हो कर एक साथ अपने अस्मिताओं के निर्माण में एक समरसतापूर्ण माहौल के साथ आगे बढ़ सकेंगे।

मिर यात्रा परियोजना पश्चात प्रवाह

मिर यात्रा के इस सम्पूर्ण पड़ाव से इल्म –ओ – तालीम ईजाद कर। मिर कमेटी आज इस निर्णय पर आ सकी है। यह समुदाय अपने पेशेवर संगीतिय धरोहर के विस्तारण की दिशा में, अपने सामुदायिक योजनाओं को अपने वैचारिकी से उर्वरा बनाने कि दिशा में, अपनी कश्ती दुनियावी समुद्र में उतार सकता है। अपने सामुदायिक तिथि पत्रक और शिविरों के प्रशिक्षण रूपी चप्पू से अपनी इस विस्तारण कश्ती को अपने पारंपरिक यजमानों के साथ मिलकर खे सकता है। मिर यात्रा परियोजना ने। मिर समुदाय के वर्तमान स्थिति के बदलाव की दिशा में एक मजबूत आस और मार्ग ज़रूर निर्मित किया है। जो बहुत ही ज़रूरी है। जो इस समुदाय को गतिमान होने के लिए एक खास सिलसिला बनाती है। जो आगे और आगे बढ़ता ही चलेगा।

मिर यात्रा परियोजना पश्चात प्रवाह में आज यह कहने की अवस्था में मिर समुदाय खड़ा है कि राज्य को मिर समुदाय के विस्तारण में भागीदार लेना चाहिए। आज मिर समुदाय की सांस्कृतिक पूंजी यानि नए श्रोताओं, मिरों को जानने वाले व्यक्तियों की स्थानीय एवं गैर स्थानीय दोनों प्रकार की संख्या में अच्छी ख़ासी बढ़ोत्तरी हुई है। इससे स्थानीय प्रशासन में एक प्रभाव पड़ता है। मिर की पहचान और ज़रूरत का प्रसार होता है। पर अभी भी स्टेट की सामाजिक प्रतिबद्धता इस मिर समुदाय से काफी और काफी दूर जान पड़ती है। इसके लिए मिर समुदाय में जो ऊर्जा बनी हुई है। इसको निरंतर रखने के लिए मिर कमेटी को रणनीतियाँ बनानी चाहिए। वैसे अनौपचारिक तौर इन मुद्दों पर मिर कमेटी के सदस्यों से मेरी बात होती रहती है। इनमें भी कमाल की ऊर्जा है पर अभी भी बहुत सारे मुद्दों पर कार्य होना जैसे जरूरी लगता है। क्योकि जो सृजनात्मक प्रवाह की गुंजाइश दिखती है। वह मिर समुदाय में इससे ज़्यादा छुपी हुई है। अगर यह बाहर आती है और मिर महिलाएँ भी अपनी अभिव्यक्ति का प्रसार करती हैं। बच्चों को संगीतिय परंपरा के साथ ही साथ मिर समुदाय इनके औपचारिक शिक्षा की भी ज़िम्मेदारी ग्रहण करते हैं। तो एक और भी मजबूत सृजनात्मक प्रवाह बनाया जा सकता है। जो मिर समुदाय के पहचान में मजबूत पहल होगा और राज्य से अपने सामुदायिक परंपरा के स्थापन में साथ देने के लिए एक सृजनात्मक माहौल बनेगा। राज्य और सहायतारत संस्थाएं दोनों एक साथ इस समुदाय के लिए उभरती है। तो समुदाय की संवहनीयता बनती है।

इस दिशा में मेरा यही कहना रहेगा कि मिर महिलाओं के कला के प्रसार के साथ और बच्चों के पारंपरिक संगीतिय अभ्यास और औपचारिक शिक्षा के साथ मिर समुदाय को संपूर्णता में अपने संगीत परंपरा को देखना और प्रवाह करना आवश्यक है।
यह भविष्योंमुखी संवाद में मिर समुदाय की वर्तमान स्थिति झाँकती है। जो अपनी अस्मिता की स्थापना में अभी अपने पैरों पर खड़ी हो रही है। सामुदायिक अस्मिता की जो संगीतिय कला भाषा है। इसके आधार पर अपनी सामाजिक मौजूदगी का ऐलान कर रही है।

मिर समुदाय वर्तमान और भविष्य के मध्य

अब तक मिर यात्रा परियोजना को संस्थागत तौर पर समेकित किया जा चुका है। इस स्थान पर, इस बिन्दु पर लगभग तीसरे चरण में सुमना द्वारा रखे गए प्रश्न को अगर याद किया जाए तो इस आलेख बिन्दु पर एक अच्छी पकड़ बनेगी। सुमना का प्रश्न था कि कब कहेंगे की मिर यात्रा परियोजना इस मिर समुदाय के लिए सार्थक हुआ। मैं इसी बिन्दु को पकड़ बात रखता हूँ। इस बात में मिर कमेटी के बातों को भी समाहित किया जा रहा है।

यह परियोजना अपने क्रियान्वयन में समूचे तौर पर व्यवस्थित रहा है। इस परियोजना के सार्थकता की पड़ताल के लिए हम देखेंगे की लगभग संभावित आठ गाँव में से इस परियोजना में पाँच गाँव मजबूत रूप से कमर कस करके शामिल रहे हैं। इन गाँव में इन परिवारों के रोजगारी स्थिति में ज़्यादा बदलाव तो नहीं आया है पर एक बदलाव यह आया है की इनमें से कुछ मिर परिवारों को इनके पारंपरिक सम्मान के साथ कार्यक्रम मिल रहे हैं। धार्मिक अटकलों ने इस परंपरा की तरफ एक रुझान वक्त किया है। उर्स समितियों में खास कर के स्थानीय समितियों में एक उत्सुकता बनी है। मिर संगीत कार्यक्रमों को आयोजित करने की खबर इधर उधर से गाँव में प्रवाहित हो रही है। इसके साथ ही देखेंगे की केवल भानिपुरा गाँव में एक महिला गायिका मिर प्रशिक्षण शिविर में संगीतिय योगदान दे रही हैं। और यहाँ तक की स्थानीय अवसरों में भी अपनी संगीतिय कला का प्रसार कर रही है। हाँ एक बात यहाँ जोडुंगा की अभी तक और भी महिलाओं को भागीदारी के अवसर बनने चाहिए थे। इसके साथ ही साथ प्रत्येक शिविर में कुछ लगभग दस बच्चे अपनी गायकी में आत्मविश्वास सँजो पा रहे हैं। स्थानीय पड़ोसी इस परंपरा में श्रोता बन रहा है। भले ही अभी इनकी गति धीमे जान पड़ती है।

इन सबमें महत्वपूर्ण है की मिर आलमों का अपने अस्मिता के स्थापन में आस लगाना और इस परियोजना को माध्यम बना कर बतौर पेशेवर संगीतकार के रूप में पुनः अपनी मौजूदगी दर्ज़ कराना। मुझे इन सारे बिन्दुओं के साथ यह कहने में कोई झिझक नहीं है की यह परियोजना एक सार्थक दिशा में आगे बढ़ा है। मिर समुदाय के लिए यह एक सार्थक प्रयास भी रहा है। यहाँ इनमें कुछ सामुदायिक बिन्दु को संपूर्णता में जोड़ कर इस परियोजना को और भी अधिक सार्थक रूप दिया जा सकता था। यह आसार भी इस परियोजना की सार्थकता से ही उभर कर मेरे सामने आया है।

मिर यात्रा के इस परियोजना से साथ मिर समुदाय अपने स्थानीय कार्यक्रमों के आयोजन में व्यस्त सा दिखता है। पर अभी भी और कुछ काम होना आवश्यक जान पड़ता है। जिनका ज़िक्र ऊपर कई बार किया जा चुका है। मिर समुदाय के अस्मिता संकटों से उभरने के लिए मिर कमेटी ने जो चरण इस परियोजना में क्रियान्वित किए हैं। वह सफल तो हैं पर आगे की कड़ी के लिए कुछ प्रश्न जैसे मिर प्रशिक्षण के प्रत्येक शिविर में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जा सकती है? जो बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं और शिविर से जुड़े हैं क्या उनके लिए औपचारिक शिक्षा की मिर समुदाय के साथ सिफ़ारिश की जा सकती है? मिर प्रशिक्षणों के साथ स्थानीय जन को निरंतर कैसे जोड़ा जा सकता है? मिर समुदाय के साथ हुए अभी तक के काम को और आने वाले काम को स्थानीय एवं जिला स्तरीय प्रशासन के साथ कैसे साझा किया जा सकता है? मिर समुदाय के खास कर युवाओं के साथ देश एवं विश्व की संगीत से जुड़ी स्थितियों का जायज़ा का लघु शैक्षणिक कार्यक्रम चलाया जा सकता है? कैसे मिर युवाओं को मिर समुदाय के साथ प्रत्यक्ष रूप से और भी ज़िम्मेदारी के साथ जोड़ सकते हैं और मिर समुदाय के लिए ये सभी जन डिजिटल सुचनाओं का आदान –प्रदान कर सकते हैं? मिर महिला के संगीत परंपरा को कैसे प्रत्यक्ष प्रस्तुतियों के लिए अवसर बनाया जा सकता है? इस तरह के आदी प्रश्न इस परियोजना के इस चरण में आज जहन में उत्पन्न हो रहे हैं।

इन पर लगातार इस संदर्भ समुदाय के साथ विमर्श करके इसकी क्रियान्वयन रूपरेखा जो समुदाय के मंथन का एक हिस्सा रहा है। इसको जल्द ही क्रियान्वयन में तब्दील करने की सामुदायिक सदस्यों द्वारा योजना बनाई जा सक रही है। इस इस मिर यात्रा परियोजना के पश्चात के क्रियान्वयनों का अभिन्न हिस्सा है और सामुदायिक वृहद प्रभाव है।
इस समुदाय के संपूर्णता में विस्तारण की आस के साथ ही साथ मैं इस मिर सिलसिला निबंधकीय लेख को यही विराम देता हूँ।

मिर सामुदायिक तिथिपत्रक

मिर सामुदाय के पेशेवर संगीत धरोहर और सामुदायिक विस्तारण की आस में यह विवरणात्मक निबंधकीय लेख मिर सराय के साथ एक संयुक्त साझा प्रयास है। इस पर आपके सुझाव एवं जिज्ञासा सदैव आमंत्रित रहेंगे।

राजकुमार रजक

leftvission@gmail.com

For

India Foundation for the Arts
Apurva' Ground Floor, No 259, 4th Cross, Raj Mahal Vilas, IInd Stage, IInd Block, Bengaluru, Karnataka 560094
Phone: 080 2341 4681